प्रभु उपहार

Brahma Kumaris - Subzone Seva Sankul
Nadiad

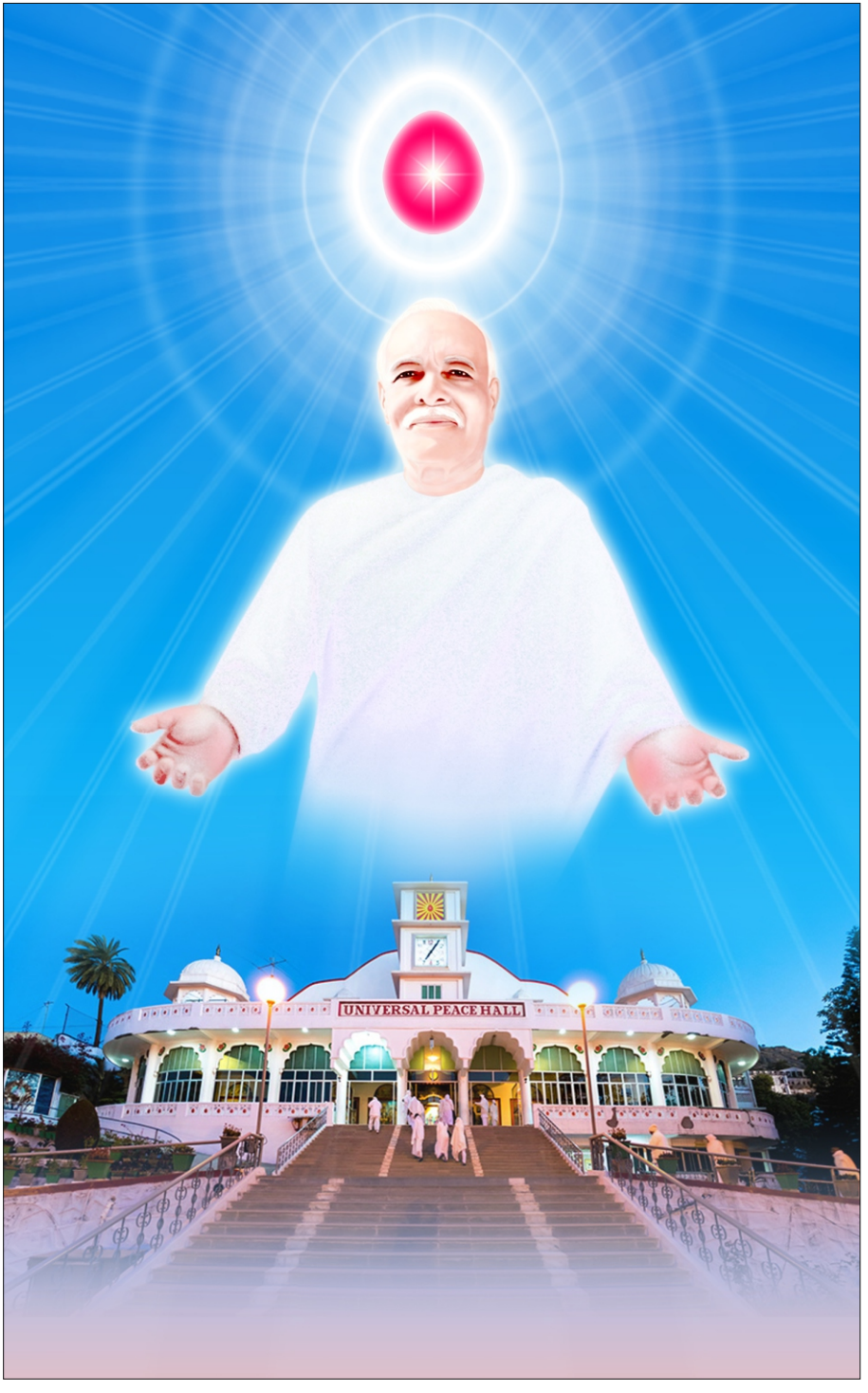
UNIVERSAL PEACE HALL

उपहार

अध्यात्म पथ के राही ब्रह्मावत्सों को समय की रफ्तार अनुसार, तीव्रगति से पुरुषार्थ करने के लिये बापदादा के बच्चों के प्रति अनमोल ज्ञान रत्न एवम् प्रेरणादायी महावाक्य मार्ग पथप्रदर्शक समान है तथा फरिश्ता स्वरूप स्थिति द्वारा मन्सा सेवा की ऊंची उडान के लिये उपयोगी है। यह प्रस्तुति इसी का संकलन है।

Third Anniversary of Prabhu Sharnam
04.02.2021

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी
ईश्वरीय विश्व विद्यालय
"प्रभु शरणम्"
सबझोन सेवा संकुल, नडीआद
फोन नं. 0268-2550280,2521280
nadiad@bkivv.org

प्रभु उपहार

परमात्मा पिताने इस सुंदर धरा पर मनुष्य जन्म देकर ही हर आत्मा को अमूल्य उपहार दिया है। सुखदायी और आनंदमय जीवन बीताने के लिये सूरज, चाँद और सितारों की रिमझिम,पहाड, सरिताअें, पशु-पंखी, पेड, फल-फूलों से भरपूर संपदा का निर्माण भी हम सब के लिये प्रभु का उपहार ही तो है। जिसके लिये हमारा दिल सदा प्रभु के शुक्रिया का गीत राहता है।

अब वर्तमान समय जब सकल सृष्टि और मनुष्य आत्मायें तमोप्रधान हो दु:खी अशांत हुई हैं, तब हमारे प्राण प्यारे परमपिता परमात्मा इस पतित दुनिया को नई सुनहरी सत्युगी-स्वर्णिम सृष्टि का निर्माण कराने हमें ज्ञानरत्नों का भंडार उपहार के रूप में दे रहे हैं। भाग्यवान आत्मायें ही स्वयं को और पिता परमात्मा को पहचान, प्रभु के इस उपहार के मूल्य को समझ अपना जीवन सफल बना सकते हैं।

नडियाद सबजोन द्वारा प्रस्तुत यह "प्रभु उपहार" पुस्तिका में अव्यक्त बापदादा के दिव्य वाणी का चयन है। बापदादा ने जो प्रेरणायें देकर हम बच्चों से उम्मीदे रखी हैं इन्हें संगमयुग के अंतिम समय में अॅटेन्शन देकर जीवन में आत्मसात् करने से बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण तथा कर्मातीत स्टेज तक पहुँचने में यह संकलन सहायक सिद्ध होगा।

विश्व कल्याणकारी शिव परमात्मा के अनमोल ज्ञान रत्नों का यह उपहार सर्व ब्राह्मण कुलभूषणों के पुरूषार्थ में उत्साह - उमंग भरते हुए, उडती कला की अनुभूति कराने में पथ - प्रदर्शक अवश्य बनेगा ; इसी शुभभावना के साथ,

आत्मीय स्नेहसे,
ब्र.कु.पूर्णिमा
उप क्षेत्रिय संचालिका,
नडियाद

(१) ईश्वरीय जन्म - अमूल्य जन्म

अभी तुम ईश्वरीय संतान हो, सतयुग में दैवी संतान होंगे। सतयुगी देव-आत्मा का पार्ट इस संगमयुगी ईश्वरीय अमूल्य रत्न बनने के पार्ट के आगे सेकन्ड नम्बर हो जाता है। आप एक रत्न के आगे विश्व के सारे खजाने कुछ भी नहीं है। अभी लास्ट जन्म तक भी विघ्न-विनाशक के रूप में अपना यादगार देख रहे हो।

इस समय स्वयं भगवान मात-पिता के रूप में आप बच्चों को श्रेष्ठ समझ, अमूल्य समझ, सम्भालते हैं अर्थात् पालना करते हैं। तो सदा अपने को अमूल्य समझ करके चलो।

अमूल्य हो लेकिन बाप के साथ के कारण अमूल्य हो। बाप को भूलकर सिर्फ अपने को समझेंगे तो भी रोंग हो जायेगा। बनाने वाले को नहीं भूलो। बन गये, लेकिन बनाने वाले के साथ से बने हो, यह है समझने की विधि। अगर विधि को भूल जाते तो मैं पन आ जाता है और सिद्धि का अनुभव नहीं होता। न यह समझो कि मैं कुछ नहीं, न यह समझो कि मैं ही सब कुछ हूँ। दोनों ही रोंग है।

(२) समय की पुकार

अभी समय छोटी-छोटी बातों में व साधारण संकल्पों के विघ्नों में गँवाने का नहीं है। अभी तो मास्टर रचयिता बन अपने भविष्य की प्रजा और भक्तों दोनों को अपनी प्राप्त की हुई शक्तियों द्वारा वरदान देने का समय आ पहुँचा है। अभी देने का समय है न कि स्वयं लेने का समय है। अगर देने के समय भी कोई लेते रहे तो देंगे कब? क्या सतयुग में? वहाँ आवश्यकता होगी क्या? तो अभी ही अपनी रचना को भरपूर करने का समय है। अभी अपने प्रति समय गँवाना व अपने प्रति सर्व शक्तिओं का प्रयोग करना अर्थात् जो कमाया वह खोया। ऐसा करने का अभी समय नहीं है। जो जमा किया है उसको सर्व आत्माओं प्रति देने का समय है। नहीं तो आपकी प्रजा व भक्त वंचित रह जाऐंगे। वे भिखारी के भिखारी ही रह जाऐंगे। क्या दाता और वरदाता के बच्चे वरदाता व दाता नहीं बनेंगे? जिस समय सर्व आत्माऐं आपके सामने भिखारी बन आयेगी तो क्या आप रहमदिल बाप के बच्चे उन आत्माओं के प्रति रहम नहीं

करेंगे? उन्हें तडपता हुआ देख सकेंगे?

लौकिक रूप में भी हद का रचयिता (माँ-बाप) अपनी रचना को दु:खी व तडपता हुआ देख नहीं सकता। तो अभी तुम भी मास्टर रचयिता हो ना? आप लोग भी अपनी रचना के दु:ख के विलाप व तडपन को कभी देख नहीं सकेंगे। अगर अभी से स्टॉक जमा नहीं करेंगे और जो कमाया उसे गँवाते रहेंगे, इकट्ठा जमा नहीं करेंगे तो उन्हें देंगे क्या? अभी जमा के खाते का पोतामेल देखना है। अपने प्रति खर्चे को फूलस्टोप देना है। दूसरे को देना वह खर्चा नहीं। यह तो एक देना फिर लाख पाना है। अपने विघ्नों प्रति शक्ति वा समय का प्रयोग करते हो वह होता है खर्च। इसकी बचत करना पडे। अब बचत की स्कीम बनाओ। खर्चे को फूलस्टोप लगाओ।

पहले सोचो कि हम किसके बच्चे हैं? अखूट खजाने के मालिक के बालक हैं। नशा है ना? जब अखूट खजाने के बालक सो मालिक हो, फिर दूसरों से शक्ति उधार लेवे उनको क्या कहा जावे - बहुत समझदार?

रोज अपना प्लेन बनाओ मनसा, वाचा और कर्मणा। अमृतवेले फिक्स करो कि बुद्धि को सारे दिन में किस कर्तव्य में बिज़ी रखना है। फिर सभी व्यर्थ खत्म हो जायेगा और समर्थ बन जायेंगे। प्लेनींग बुद्धि बनाने से ही अपनी सर्व शक्तिओं को जमा कर सकेंगे। जो वेस्ट नहीं करते वह बेस्ट बन जाते हैं।

साक्षीपन की सीट पर सेट होकर वरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव हर्षित रहेंगे।

श्रीमत है हाथ और स्मृति अर्थात् बुद्धियोग है साथ। मेले में जब हाथ और साथ दोनों ही छोड देते हो अर्थात् बाप से किनारा कर देते हो तब भी परेशान होते हो। हाथ और साथ अगर न छोडो तो सदा खुशी में रहेंगे।

(३) कितना बडा बेहद का कार्य और...

भिन्न भिन्न प्रकार की कम्पलेन्ट्स करते रहते हो । योग नहीं लगता, व्यर्थ संकल्प बहुत आते हैं या फलानी शक्ति नहीं धारण कर सकते हैं . . . इत्यादि।

इन कम्पलेन्ट्स का कारण क्या है? व्यर्थ संकल्प और विकल्प। दूसरी मुख्य कम्पलेन है वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है।

व्यर्थ संकल्प चलने का मूल कारण यह है बाप द्वारा ज्ञान का खजाना मिलता है, उस खजाने की कमी है। अगर सारा समय ज्ञान रत्नों से खेलने में और सुमिरन करने में बुद्धि को बिजी रखो तो क्या व्यर्थ संकल्प आ सकते हैं? आप लोगों को बाप द्वारा जिम्मेवारी वा विश्वकल्याण का जो कार्य मिला है वह कितना बडा है और अब तक भी कितना बाकी रहा हुआ है?

एक तो ज्ञान खजाने के सुमिरन का कार्य, दूसरा ६३ जन्मों के पाप कर्मों के खाते को भस्म करने का कार्य, तीसरा व्यर्थ - ये तीनों ही विशेष और बेहद के कार्य हैं। इतना कार्य होते हुए भी बुद्धि कैसे फ्री रहती है? आजकल कौरव गवर्नमेन्ट के छोटे-छोटे क्लार्क भी टाइम-टेबल सेट करते हैं तो क्या आप मास्टर नोलेजफूल, मास्टर सर्वशक्तिवान अपना टाइम-टेबल सेट नहीं कर सकते?

(४) देहिअभिमानी स्थिति

पुरूषार्थ में मुख्य दो कमियाँ या कमजोरियाँ हैं जिसके कारण उडती कला (कमाल) नहीं दिखा पाते। १. अभिमान और २. अनजानपन।

१. किसीने कुछ कहा, इशारा दिया तो संकल्प आ जाता है - यह क्यों कहा? असहनशक्ति की लहर सूक्ष्म में आ जाती है। इसे वर्तमान और भविष्य दोनों के लिये उन्नति का साधन समझो। इसे समा दो या सहन करने की शक्ति भरने का अभ्यास करो।

२. सूक्ष्म में भी वृत्ति वा दृष्टि में हलचल मचती है (क्यों, कैसे हुआ?, मेरे साथ ही ऐसा क्यों?) इसको भी देहि अभिमानी की स्टेज नहीं कहेंगे।

३. जैसे महिमा सुनने से दृष्टि वृत्ति में उस आत्मा प्रति स्नेह की भावना रहती है, वैसे ही अगर कोई शिक्षा का इशारा देता है तब उस आत्मा के प्रति स्नेह की, शुभचिंतक की भावना रहती है कि यह मेरे लिए बड़ा शुभचिंतक है ऐसी

स्थिति को कहा जाता है देहि अभिमानी।

४. अपमान सहन नहीं कर सकते माना अभिमान है। अनजान भी कई बातों में धोखा खाते हैं। अपने को बचाने के लिये अनजान बन जाते हैं।

५. स्वमान और निर्माण यह दोनों को धारण करने हैं। मनसा में स्वमान की स्मृति और वाचा-कर्मणा में निर्माण अवस्था रहे तो अभिमान खत्म हो जायेगा।

६. जो सुनते हैं, सुनाते हैं उसे स्वरूप में नहीं लाते वो है अनजान।

७. जैसे साकार ब्रह्मा बाप में हर कदम हर कर्म शिक्षा स्वरूप प्रेक्टिकल देखा...।

(५) भगवान के भाग्यवान बच्चों के लक्षण

★ स्वयं अपने को हर कर्म में भाग्यवान अनुभव करते।

★ उनके चेहरे और चलन से भाग्य औरों को भी अनुभव होता है।

★ सदा भाग्य की झलक और फलक प्रत्यक्ष रूप में औरों को दिखाई दे।

★ भाग्यवान आत्मा सदा चाहे गोदी में पलती, चाहे गालीचों पर चलती, झूलों में झूलती, पर मिट्टी में पाँव नहीं रखतीं। कभी पाँव मैले नहीं होते।

★ आप बुद्धिरूपी पाँव से सदा फर्श के बजाय फरिश्तों की दुनिया में रहते। इस पुरानी मिट्टी की दुनिया में बुद्धिरूपी पाँव मैले नहीं करते। भाग्यवान बच्चे मिट्टी के खिलौने से नहीं, सदा रत्नों से खेलते हैं। भाग्यवान बच्चे सदा सम्पन्न होते हैं इसलिये "ईच्छा मात्रम् अविद्या" की स्थिति में रहते हैं।

★ भाग्यवान आत्मा सदा महादानी पुण्यात्मा बन औरों का भी भाग्य बनाती रहती हैं।

★ भाग्यवान आत्मा सदा ताज, तख्त, तिलकधारी रहती हैं।

★ भाग्य की निशानी त्याग है। जितना ही आत्मा भाग्य अधिकारी, उतना ही त्यागधारी होती हैं।

★ भाग्यवान आत्मा सदा भगवान समान निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी इन तीनों विशेषताओं से भरपूर होती हैं। ये सब निशानियाँ अपने में अनुभव करते हो?

(६) संकल्प की सिद्धि और कर्तव्य की विधि

त्रिकालदर्शी की स्थिति में स्थित होकर के आदि-मध्य-अन्त को जानकर कर्तव्य करने से सदैव सफलता मिलेगी। संकल्प की सिद्धि और कर्तव्य की विधि - यह दोनों होने से जन्मसिद्ध अधिकार सहज ही पा लेते हो। संकल्पों की सिद्धि प्राप्त करने के लिये मुख्य पुरुषार्थ यह है - व्यर्थ संकल्प न रच समर्थ संकल्पों की रचना करो। संकल्पों की रचना जितनी कम उतनी स्थिति पावरफुल होगी। जितनी रचना ज्यादा उतनी ही स्थिति शक्तिहीन होती है। तो संकल्पों की सिद्धि प्राप्त करने का पुरुषार्थ क्या करना पडे? - व्यर्थ रचना बन्द करो। कर्मों में सफलता की युक्ति है मास्टर त्रिकालदर्शी बनना। सर्वीस सिर्फ मुख से ही नहीं होती लेकिन श्रेष्ठ कर्मों द्वारा भी सर्वीस कर सकते हो। समय प्रति समय स्वयम् को शक्ति स्वरूप की स्मृति में रखने से कर्मबन्धन विघ्न नहीं डालेंगे और हिसाब-किताब जल्दी चुक्तू होगा।

जितना जितना अपने को चेन्ज करते जाओगे उतना औरों को भी चेलेन्ज कर सकेंगे। इसलिये यह दो बातें याद रखना। जब सुकर्म करते हो तो बाप का स्नेही स्वरूप सामने आता है और अगर कोई विकर्म करते हो तो विकराल रूप सामने लाना चाहिए क्योंकि आप सभी सृष्टि के स्टेज पर हीरो एक्टर्स हो। हीरो एक्टर्स पर सभी की निगाह होती है। जब आसक्ति खत्म हो जाती है तब शक्ति स्वरूप बन सकते हैं। अपनी देह में वा संबंधों में, कोई भी पदार्थ में कहाँ भी अगर आसक्ति है तो माया भी आ सकती है। फिर शक्ति स्वरूप नहीं बन सकते। इसलिये अपने कर्तव्य को और अपने स्वरूप को - दोनों को याद रखते हुए चलते चलो। शक्ति को कम न होने देना। जमा करना सीखो। भविष्य २१ जन्मों के लिये जमा करना है। इसलिये सदैव यही सोचो कि जमा कितना किया? अच्छा।

(७) संकल्प की सिद्धि स्वरूप बनने की सहज विधि

- ✶ त्रिकालदर्शी की स्थिति में स्थित होकर, कार्य के आदि-मध्य-अंत को जानकर कर्तव्य करने से सदैव सफलता मिलेगी।
- ✶ संकल्प की सिद्धि और कर्तव्य की विधि दोनों से जन्मसिद्ध अधिकार पा लेते हैं।
- ✶ कर्मो में सफलता की युक्ति है - त्रिकालदर्शी बनना। आदि-मध्य-अंत को जानकर फिर कार्य करना।
- ✶ शक्ति स्वरूप की स्थिति द्वारा कार्य करें, तो बन्धन विघ्न नहीं डालेंगे। देवियों का यादगार नयनों में स्नेह और हस्तों में शस्त्र (शक्ति) है।
- ✶ जगत की आत्माओं पर स्नेह, तरस और कल्याण की भावना हो।
- ✶ कोई भी प्रकार की आसक्ति (लगाव, प्रभाव, झुकाव, आकर्षण) है तो माया आ सकती है। परिवर्तन शक्ति से आसक्ति को अनासक्ति में परिवर्तन करो।
- ✶ २१ जन्मों के लिये जमा करना है दैवीगुण, शक्तियाँ, रूहानियत अभी करेंगे तो जमा होगा। यही समय है।

(८) मंगल मिलन किसे कहेंगे?

होली मनाना अर्थात् "बीती सो बीती" का पाठ पक्का करना। (हो-ली अर्थात् जो हुआ सो हो गया।) बीती को बीती कर आगे बढना यह है होली मनाना। जब ऐसी स्थिति हो जाती है तब पुरुषार्थ की स्पीड तेज हो जाती है। पुरुषार्थ की स्पीड ढीली करने वाली मुख्य बात यह होती है बीती हुई बातों को चिन्तन में लाना, चित्त में रखना और वर्णन करना।

होली के दिन एक तो रंग लगाते हैं, उसके एक दिन पहले होली को जलाते हैं। जलाने के बाद मनाते हैं और मिठाई खाते हैं। रंग कौन सा लगाना है? (प्रभु के संग का रंग "प्रभु तेरे रंग में हम रंग गये ऐसे...") जब रंग लग जाता है फिर मधुरता का गुण स्वत: ही आ जाता है। अपने वा दूसरों की बीती बातों को न देखने से सरल चित्त

हो जाता है और जो सरल चित्त बनता है उसका प्रत्यक्ष रूप में गुण मधुरता देखने में आता है। उनके नयनों से मधुरता, मुख से मधुरता और चलन में मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है। इसलिये मिठाई का नियम है। होली पर और क्या करते हैं? एक दो को गले मिलते हैं यही मंगल मिलन है। मधुरता आने के बाद मंगल मिलन क्या होता है? संस्कारों का मिलन होता हैं। भिन्न भिन्न संस्कारों के कारण ही एक दो से दूर दोते हैं।

बापदादा का बच्चों से मिलन तो है ही। लेकिन आपस में सभी से बडे ते बडा मिलन है संस्कारों का मिलन। जब यह संस्कार मिलन हो जायेगा तब जयजयकार होगी।

देवियों का गायन है ना, कि वह सभी को सिद्धि प्राप्त कराती हैं। जब पुरूषार्थ की विधि संपूर्ण हो जाती है तब सिद्धि प्राप्त होती है। देवियाँ स्वयं सिद्धि को प्राप्त की हुई हैं। तब दूसरों को रिद्धि सिद्धि दे सकती हैं। तुम्हारे पुरूषार्थ की सिद्धि तब होगी जब संस्कारों का मिलन होगा।

संस्कारों को मिलाने के लिये दिलों का मिलन करना पडेगा। संस्कारों को मिलाने के लिये भुलाना, मिटाना और समाना - यह तीनों ही बातें करनी पडेगी। एक दो की बातों को स्वीकार करना और सत्कार करना - यह दोनों ही बातें आ जाती हैं। फिर संपूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आ जाती हैं। एक दो को सत्कार देना ही भविष्य का अधिकार लेना है।

(९) आत्मा परमात्मा का मंगल मिलन मेला

१. जब परमात्मा सृष्टिचक्र के अंतिम समय अर्थात् संगमयुग में आकर अपना परिचय देते हैं, इसको ही आत्मा और परमात्मा का सुंदर मेला कहा जाता है, जो आत्माओं को जीवन में परमशांति और परमानंद की अनुभूति कराता हैं। इस मिलन के अनेक दृश्य हैं जिनमें पहला है - निराकार शिवपिता ने साकार ब्रह्मा तन में आकर अनेकानेक आत्माओं को साक्षात्कार आदि के द्वारा

अलौकिक-दिव्य अनुभव करा कर प्रेरित किया जो प्रभु के रंग में रंग गईं। (ॐ मंडली सिंध-हैदराबाद में)

२. दूसरा मिलन है, यज्ञ की स्थापना के आदि में १४ साल की अखंड भट्ठी चली, जिसमें अखंड तपस्या के साथ साकार तन में पधारे परमात्मा के साथ गोप-गोपिओं के रूप में अतीन्द्रिय सुख का मिलन रहा। (शास्त्रों में इसका गायन रास-लीला के वर्णन द्वारा हुआ) (कराची में)

३. तीसरा मिलन है, जब संस्था का मुख्यालय १९५० में १४ साल की तपस्या के बाद कराची से भारत में स्थानान्तरित हुआ और विश्वकल्याण की सेवा का प्रारंभ हुआ तो आनेवाली भाग्यशाली आत्माओं को निराकार शिव परमात्मा का अनुभव साकार मम्मा बाबा दोनों की परम सुखदायी गोद के द्वारा हुआ। (पांडव भवन आबू पर्वत)

४. चौथा है, साकार ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद अव्यक्त बापदादा का साकार रथ (गुलजार दादी) द्वारा साकार के समान मिलन। जैसे साकार में शिवबाबा ब्रह्माबाबा के तन द्वारा व्यक्तिगत रूप से मिलते थे, अपनी कल्याणमयी दृष्टि से, मधुर वचनों से आत्माओं को प्यार और दुलार देते थे वैसे ही अव्यक्त बापदादा भी बच्चों से मिलकर उनका हालचाल पूछते हुए पालना करते थे। (ओम् शांति भवन, आबू पर्वत)

५. पांचवा है अव्यक्त बापदादा का साकार तन द्वारा व्यक्तिगत रूप में मिलन मेला जो पहले जैसा नहीं रहा। परिवर्तनशील समय के अनुसार मिलन की रीति भी परिवर्तन होती गई। वह भी समय था, जब ओम् शांति भवन में अव्यक्त बापदादा के साथ गुड-नाईट और गुड-मोर्निंग साथ-साथ होते थे अर्थात् मिलन में रात से दिन हो जाता था। (ओम् शांति भवन, आबू पर्वत)

६. छट्ठा है बापदादा बच्चों से मिलने और अपनी पालना देने सभा के बीच में साकार रथ द्वारा परिक्रमा लगाते हुए दृष्टि देते थे। (डायमंड हॉल, शांतिवन)

७. सातवाँ आया सिर्फ दृष्टि और मुरली के द्वारा मिलन मेला। वह भी अति मंगलकारी मिलन मेला रहा। जिस के लिये बाबा नये-नये बच्चों से कहते थे लेट आये परन्तु टू-लेट नहीं है। यह भी बडा भाग्य है। (डायमंड हॉल, शांतिवन)

८. आठवाँ दृश्य है अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर परमात्मा मिलन मनाना अर्थात् अब समय आया है (गुलजारदादी के रथ बिना) स्वयं अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मेले का। अव्यक्त बापदादा ने १९६९ में ही इशारा दिया था कि अन्त तक सदाकाल का मिलन वे ही बच्चे कर सकेंगे, जो अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने का सफल अभ्यास करेंगे।

(१०) सिर्फ दो बातें - महारथी बनने की

१. महारथी बनने के लिये सिर्फ दो बातें याद रखो। अपने को सदैव साथी के साथ रखो। साथी और सारथी वह है महारथी।

२. पुरूषार्थ में कमजोरी के दो कारण हैं। बाप के स्नेही बने हो लेकिन बाप को साथी नहीं बनाया है। अल्प समय के लिये साथी बनाते हैं इसलिये शक्ति की इतनी प्राप्ति नहीं होती है।

३. सदैव बापदादा साथ हो तो सदैव मिलन मनाने की लगन में साथ हो। जो मग्न है उन की लगन और कहीं लग न सके। सारे दिनचर्या में हर कार्य बाप के साथ करो तो क्या माया डिस्टर्ब कर सकती है?

४. हाथ पकडा है, साथ नहीं लिया है इसलिये माया द्वारा घात होता है। गलतियों का कारण है गफलत।

५. अगर रूह को न देख रूप तरफ आकर्षित होते हैं तो समजो मुर्दे से प्रीत कर रहे हैं। मुर्दे से प्रीत रखने वालों को समझना चाहिये कि हमारा भविष्य मुर्दाघाट में कार्य करने का है।

६. जो भी संकल्प वा कार्य करते हो उसके लिये लक्ष्य और प्राप्ति अर्थात् एम-ऑब्जेक्ट सामने रखो।

७. अपने को सौ गुना सजासे बचाने के लिये सदैव बापदादा को अपने सामने रखो। हर संकल्प, हर कार्य को अव्यक्त बल से अव्यक्त रूप द्वारा वेरीफाय कराओ। फिर करने से कोई भी व्यर्थ संकल्प या विकर्म न होगा। कमजोरी और कमियों की कयामत करो।

(११) तीव्र पुरुषार्थी किसे कहेंगे?

- शुद्ध संकल्प स्वरूप स्थिति का अनुभव हो।
- अनेक संकल्पों की समाप्ति हो, एक ही शुभ संकल्प (स्वरूप का) रह जाता हो इस स्थिति को ही शक्तिशाली, सर्व कर्म-बंधनों से न्यारी और अति प्यारी स्थिति कहा जाता है।
- अभी-अभी अल्पकाल के लिये नीचे उतरे हैं कार्य करने अर्थ। सदाकाल की ऑरिजिनल स्थिति वही रहे। (आत्मिक स्थिति)
- जैसे बाप में निश्चय, पढाई में निश्चय है वैसे ही अपने में भी हर समय और हर संकल्प निश्चयबुद्धि बनकर रहना उसकी कमी है।
- जो तीव्र पुरुषार्थी है उनके मुख से "कभी" शब्द कब न निकलेगा। वह सदैव "अभी" सिर्फ कहेंगे ही नहीं लेकिन अभी-अभी करके दिखायेंगे। यह है तीव्र पुरुषार्थी।
- जो भी बात कमजोरी वा कमी की दिखाई दे उसको अभी-अभी खत्म कर दे।
- शिक्षाओं को शिक्षा (पॉइन्ट) की रीति से बुद्धि में नहीं रखो, लेकिन पॉइन्ट को प्रैक्टिकल स्वरूप बनाओ। फिर सदैव पॉइन्ट (बिन्दी) स्वरूप में स्थित हो सकेंगे।
- मैजोरिटी पॉइन्ट्स को स्मृति में धारण करते हैं, वर्णन भी करते हैं लेकिन

पॉइन्ट्स को स्वरूप में लायेंगे तो वर्णन करने के बजाय साक्षात्कारमूर्त बन जाओंगे।

O संपूर्ण वफादार वे कहलायेंगे जिसको संकल्प में भी सिवाय बाप के कर्तव्य वा बाप की महिमा के और बाप के ज्ञान के सिवाय और कुछ भी दिखाई ना दे। "एक बाप दूसरा न कोई" इसकी परख क्या होगी?

O सच्चाई और सफाई। न सिर्फ वाणी तक, लेकिन संकल्प तक।

(१२) तीव्र पुरुषार्थी के लिये टीप्स

१. स्वयम् को शक्ति स्वरूप समजो तो आसक्ति खतम।

२. विचित्र (निराकार) को, चरित्र को (गुणों को) देखो तो आकर्षण दूर होगी।

३. स्वयम्, संयम और समय की स्मृति से त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी और त्रिलोकीनाथ बन जाओंगे।

४. अव्यक्तमूर्त बनना है तो व्यक्त को न देखो। (देखते हुए भी प्रभावित न हो)

५. व्यक्त में आने से ही नेगेटिव, व्यर्थ संकल्प शुरू होते हैं। सदैव ज्ञान खजाने की स्मृति द्वारा मनन-मंथन-मगन रहने की लगन हो।

६. संयम में कमी है तो स्वयम् और सर्वशक्तिवान के मिलन में कमी।

७. सबसे खौफनाक, नुकसानकारक वह जो अन्दर एक और बाहर दूसरा रूप है, वह समीप नहीं आ सकता न स्नेही बन सकता।

८. बलि चढनेवाले को ईश्वरीय बल मिलता है।

९. चित्र के अन्दर जो चेतन है, उसको देखो। चित्र के अन्दर जो चरित्र है, उन चरित्रों (गुणों) को देखो।

१०. कर्म करते हुए अपने को अशरीरी आत्मा समजना - सारे दिन में यह प्रेक्टीस करना है।

११. सदैव अपने साथी के साथ कम्बाइन्ड रहो। साथी और सारथी - वह है महारथी।

१२. रियायत का समय गया, अब है रुहानियत का समय।

१३. अभी भी बचपन की आलस्य, अलबेलापन, बेपरवाही, बहानेबाजी की भूलें रही हुई हैं तो १०० गुणा दंड।

१४. अपने वर्तमान पुरुषार्थी स्वरूप और अंतिम संपूर्ण स्वरूप का अन्तर देख कर समीपता लाने का तीव्र पुरुषार्थ करो।

(१३) तीव्र पुरुषार्थ - बापदादा की उम्मीद

बापदादा की हम ब्राह्मणों प्रति उम्मीद है कि बच्चे, समय की गति देखो, समय समाप्ति की ओर तीव्रगति से दौड रहा है। अब चींटी मिसल धीरे-धीरे पुरुषार्थ का समय गया। अब हाई जम्प लगाओ। सब तरफ से न्यारा (डीटेच) बन जाओ। अशरीरी आत्मिक स्वरुप में स्थित रहने का पुरुषार्थ करो। उपराम रहो। नीचे देह-भान रुपी धूल पर पांव रखो ही नहीं। साक्षीदृष्टा बनकर व्यवहार में आओ। एक सेकन्ड में वाणी से परे हो जाने का अभ्यास बार-बार करो। अपना सूक्ष्म लाइट का आकारी स्वरुप इमर्ज करो। अव्यक्त फरिश्ता स्थिति धारण करो। दृष्टि में रूहानियत और वाणी में जौहर भर हर आत्मा प्रति शुभभावना और कल्याण की कामना रखो। उमंग और उत्साह की पंखों से उडती कला का अनुभव करो। सदा खुश रहो। अपने श्रेष्ठ भाग्य के नशे में रहो और औरों को खुशियाँ बाँटो। इस संगमयुग की अंतिम घडियों के पलपल का वेल्यू समझो अर्थात् जागो और जगाओ।

चिंतन : हम बापदादा के वारिस बच्चे उनकी उम्मीदों को भली भाँति जानते हुए भी उन्हें पूरी करने में तत्पर क्यों नहीं है? जो स्थिति बच्चों की बाबा की चाहना अनुसार होनी चाहिये वह हुई है? बाबा कहते हैं मैजोरिटी बच्चे योग में कच्चे हैं। एकरस अचल-अडोल अवस्था अभी तक नहीं आई है। हम बच्चे अपनी कमजोरी जानते भी हैं। जैसे व्यर्थ संकल्प नेगेटीवीटी, बाह्यमुखता, अलबेलापन, सुस्ती, धारणा और मर्यादाओं का उल्लंघन, नम्रता-निर्मलता और निर्माणता का अभाव, मैं और मेरापन का घेराव, अहंकार - टकराव के कारण स्नेह और एकता में कमी,

ईश्वरीय परिवार की भावना का अभाव इत्यादि इत्यादि।

समय घंटी बजा रहा है। प्रकृति अपना रुप बदल रही है। कहाँ तक अलबेलेपन की नींद में सोते रहना है। अभी नहीं जागेंगे, फिर तो तीव्र पुरुषार्थ कर उडती कला में जाने का और डबल-लाइट फरिश्ता स्वरूप बन मनसा सेवा द्वारा अनेक आत्माओं को अंचली देने का हीरेतुल्य समय हाथ से छूट जायेगा। फिर अंतिम हाहाकार के समय पश्चाताप के अश्रु बहाने के सिवाय कुछ नहीं कर सकेंगे। समझा?

(१४) तीव्र पुरुषार्थ - निशानियाँ

१. शुद्ध संकल्प स्थिति का अनुभव हो। ऐसी स्थिति ही शक्तिशाली है जो सर्व कर्म बन्धनों से न्यारी और अति प्यारी स्थिति हो।

२. ऐसी उच्च स्थिति के आसन से कर्म करने के लिये नीचे उतरते हुए भी अपना निजी स्थान (मूल वतन) सदा स्मृति में रहे। भूलते क्यों हो? यही सोचो कि अभी अल्प काल के लिये नीचे उतरे हैं, कार्य पूरा होते ही सदाकाल की ओरीजिनल स्थिति की स्मृति में कर्मयोगी बन रहेंगे। यह स्मृति ही समर्थी दिलाती है। यह स्टेज जन्मसिद्ध अधिकार है।

३. सपूत बने हो? तो सबूत दिखाना है। सबूत है - श्रीमत के आधार पर, डायरेक्शन प्रमाण चलना। ट्रस्टी होकर चलना। डीटेच होकर, बेहद की वैराग्य वृति से चलना। हर आत्मा प्रति शुभभाव, रहम भाव हो।

४. जैसे बाप में निश्चय, पढाई में निश्चय है, वैसे अपने में भी हर समय, हर संकल्प निश्चयबुद्धि बन कर्म करना। उसकी कमी है।

५. शिक्षाओं को केवल बुद्धि में नहीं स्वरूप में लाएँगे। जिससे असली स्टेज - ज्ञान स्वरूप, प्रेम स्वरूप, आनंद स्वरूप की स्थिति बन जाएँगी।

६. पोइंट स्वरूप बनना है, सिर्फ पोइंट को बुद्धि में धारण और वर्णन करने तक नहीं रह जाना है। स्वरूप बनने से ही साक्षात्कार मूर्त बन जाएँगे।

७. मुख्य फरमान है निरंतर याद में रहो और मन, वाणी, कर्म में प्योरीटी हो।

निरंतर अर्थात् संकल्प में भी अशुद्धता नहीं। अकर्तव्य कार्य अगर देखते हो तो भी असर हो जाता है और हिसाब बन जाता है।

८. अब घर जाने की तैयारी नहीं करेंगे? माया आवे तो नमस्कार करने आवे। अभी छोटी बातों में खेलते रहेंगे तो, समय निकल जाएगा और पश्चात्ताप ही करना पडेगा।

९. अभी ऐसी दिव्य स्थिति बनाओ, जो अनुभव कराये कि भक्त लोग धूप जलाते हैं, गुणगान करते हैं - आपको प्रेक्टिकल में खुश्बुयें अनुभव हो।

१०. सम्पूर्ण वफादार जिसे स्वप्न में भी सिवाय बाप और बाप के कर्तव्य तथा महिमा वा ज्ञान के सिवाय कुछ भी दिखाई न दे।

११. "एक बाप दूसरा न कोई" यही महा तपस्या है। उसकी परख है - चलन में सच्चाई और सफाई न सिर्फ वाणी तक, संकल्प में भी। पहला वायदा है "और संग तोड एक संग जोडू" उसे निभाना है।

(१५) रोयल फेमिली में आने के लिये पुरूषार्थ

सतयुग में रोयल फेमिली में आते हैं वो भी पहला नंबर फर्स्ट डिवीझन है। चाहे वह तख्त पर नहीं बैठते लेकिन प्रालब्ध नंबर वन के हिसाब से ही है। इसका श्रेष्ठ पुरुषार्थ क्या?

"जो सदा संगमयुग पर बाप के दिलतख्त नशीन स्वत: और सदा रहता है, कभी कभी नहीं। जो सदा आदि से अंत तक स्वप्न मात्र भी, संकल्प मात्र भी पवित्रता के व्रत में सदा रहा है, स्वप्न तक भी अपवित्रता को टच नहीं किया है। ऐसी श्रेष्ठ आत्माएँ तख्तनशीन हो सकती है।"

"जो आदि से चारों ही सब्जेक्टस् में बाप के दिलपसंद हैं, वही तख्त ले सकते हैं। साथ साथ जो ब्राह्मण परिवार का हर एक दिल से सम्मान करता है, ऐसे सम्मानधारी ही तख्तनशीन बन सकता है। अगर इन बातों में किसी न किसी में कमी है तो वह नम्बरवार रोयल फेमिली में आ सकता है।"

(१६) अमानत

अभी नवीनता चाहते हो ना? नई रौनक तब आयेगी जब हर कर्म में, हर संकल्प में, वाणी में रूहानियत होगी।

रूहानित कैसे आयेगी? उसके लिये क्या करना है, जो रूहानियत कायम रहे? रूहानियत न रहने का कारण क्या है?

(बच्चों ने उत्तर दिया) अच्छा, वफादार-फरमानदार क्यों नहीं बन पाते हैं? (सम्बन्ध की कमी)

संबंध में कमी भी क्यों पडती है? निश्चय बुद्धि का तिलक तो सभी को लगा हुआ है। रूहानियत कायम न रहने का कारण यह है कि अपने को और दूसरों को जिनके सर्विस के लिये हम निमित्त हैं, उन्हों को बापदादा की अमानत समझकर चलना है। जितना अपने को और दूसरों को अमानत समझेंगे तो रूहानियत आयेगी। यह मन भी एक अमानत है। इस अमानत में ख्यानत नहीं डालनी है। अपना तन, मन जो भी निमित्त रूप में मिला है - चाहे जिज्ञासु है, सेन्टर है, सेवा है, कोई भी वस्तु है लेकिन अमानत मात्र है। अमानत समझने से इतना ही अनासक्त होंगे।

(१७) रिफाइन स्थिति

१. क्वोन्टीटी कम, क्वोलिटी ज्यादा / पॉवरफुल हो।

२. रिफाइन होते जाते हैं तो कम समय, कम संकल्प, कम एनर्जी में जो कर्तव्य होगा, सौ गुणा होगा। हल्कापन भी होगा।

३. हल्केपन की निशानी ऊँची स्थिति। नीचे नहीं आयेगा। भारी हो जाते तो महेनत ज्यादा करनी पडती है। हल्का होने से मेहनत कम हो जाती है। रिफाइन चीज जास्ती भटकती नहीं, स्पीड पकड लेती है। (जैसे कार, स्कूटर) अगर किचडा मिक्स होगा तो स्पीड पकड नहीं सकेगी। रूक जायेगी।

४. जितना जितना रिफाइन हो रहे हो, उतना ही छोटी-छोटी बातें वा भूलें वा संस्कार जो हैं, उनका फाइन भी बढता जायेगा।

५. अगर रिफाइन नहीं तो फाइन समज़ो। दोनों का फोर्स बढता जा रहा है। यही प्रत्यक्ष रूप का नज़ारा है।

६. जो गुप्त है, अब प्रत्यक्ष हो रहा है क्योंकि यथार्थ माला के मणके नम्बरवार प्रत्यक्ष होने वाले हैं। चलन से ही स्वयं अपना नंबर ले लेते हैं। दोनों बातें साक्षी होकर देखते हुए हर्षित रहना है।

७. वतन से यह खेल स्वत: दिखाई दे रहा है। जितना जो उंचा होता है, उनको स्वत: दिखाई देता है।

(१८) बाप समान बनना है तो...

अभी जैसे समय की रफ्तार चल रही है उसी प्रमाण अभी यह पाँव पृथ्वी पर न रहना चाहिये। कौन सा पाँव? बुद्धि रूपी पाँव, जिससे याद की यात्रा करते हो। कहावत है ना कि फरिश्तों के पाँव पृथ्वी पर नहीं होते। तो अभी यह बुद्धि, पृथ्वी अर्थात् प्रकृति के आकर्षण से परे हो जायेगी फिर कोई भी चीज नीचे नहीं ला सकती है। फिर प्रकृति को अधीन करनेवाले हो जायेंगे। न कि प्रकृति के अधीन होनेवाले।

अभी जल्दी-जल्दी अपने को ऊपर की स्थिति में स्थित करने का प्रयत्न करो। साथ चलना, साथ रहना और फिर साथ में राज्य करना है ना? साथ कैसे होगा? समान बनने से। समानता कैसे लायेंगे? साकार बाप के समान (फॉलो फादर) बनने से। साकार बाप-ब्रह्मा में समानता कैसे आई? समर्पणता से समानता सेकन्ड में आई।

(१९) बापदादा की रूहरूहान - दिलपसंद आदि रत्नों से

(भट्टी १९७०)

यह "बालक सो मालिक" ग्रुप स्थापना, पालना और समाप्ति अर्थात् विनाश करनेवाला ग्रुप है। आप के इस कर्तव्य के यादगार बिन्दी दे रहे हैं, स्मृति भी, स्थिति भी और कर्तव्य भी तीनों ही इस यादगार में। जैसे साकार में समीप आये हो ना, वैसे ही सम्बन्ध में भी समीप हो। (फिर हरेक महारथी बडी बहनों को बापदादा बिन्दी

लगाये रूहरूहान करते गये।)

(बृजइन्द्रा बहन) यह बिन्दी है तख्त की निशानी। तख्त है स्थिति की निशानी और यह कर्तव्य की निशानी।

(दीदी मनमोहिनी) बालक मालिक है इसलिये समान बिठाते हैं तख्त पर (संदली पर)। साकार में थी दिल के तख्तनशीन, अब है सर्विस तख्तनशीन और भविष्य में होगी राज्य तख्तनशीन। संगम पर तख्तनशीन अभी बनते हैं। यह है कर्तव्य का बन्धन अव्यक्त रूप में। स्नेह के बन्धन में साकार रूप में थे।

(पुष्पशांता बहन) अभी सर्विस के तख्त पर विराजमान हो। स्वयं को भी भूल सर्विस याद रखनी है।

(कुमारका बहन) स्वप्न में भी कब सोचा था कि अव्यक्त रूप से तख्तनशीन बनाएंगे? तख्तनशीन कौन बनता है? जो सदैव नशे में है और निशाना बिलकुल एक्यूरेट रहता हो। नशा और निशाना, योग और ज्ञान ऐसे बच्चे ही तीनों तख्त के अधिकारी बनते हैं।

(चन्द्रमणी बहन) आप सूर्यमणी हो वा चन्द्रमणी हो? शक्तिरूप भी हैं और शीतल रूप भी। जब लाइट और माइट दोनों में एकरस होंगे तब नंबर आउट होंगे।

(निर्मलशान्ता बहन) तन के रोग पर विजय प्राप्त कर रही हो। संगम पर ताज, तिलक, तख्त और सुहाग भाग सभी मिलते हैं। एक ही समय पर सर्व प्राप्तियॉ बापदादा कराते हैं। जो एक जन्म की देन अनेक जन्म चलती है। वैसे फिर अनेक जन्मों के हिसाब-किताब एक जन्म में चुक्तू करना है। जब साक्षी हो देखने लग पडते हो यह व्याधि बदल खेल रूप में हो जाती है। अब अन्त में साक्षात्कारमूर्त बनना है। अब अन्तिम पुरूषार्थ यह रह गया है। साक्षात्कारमूत बन बापदादा का साक्षात्कार और अपना साक्षात्कार कराना है।

(जनक बहन) अब वाणीमूर्त बने हो, फिर बनेंगे साक्षात्कारमूर्त। साक्षात् रूप बनने के लिये साक्षात् बापदादा समान बनना है। जितनी समानता उतना समीप।

समीप रत्न की परख समानता है।

(संतरी बहन) जैसे साकार में समीप वैसे ही संस्कारो में भी समीप। जितना जो संस्कार के समीप होता है उतना सम्बन्ध में भी समीप होगा। साकार रूप में मुख्य संस्कार कौन सा था? उदारता और समानता। यह दोनों गुण संगम के मुख्य हैं। जैसे वह गहने चमकते हैं वैसे इन गुणों रूपी गहनों से आत्मा चमकती है। लौकिक, अलौकिक और पारलौकिक तीनों सम्बन्ध में गहने पहनने के अधिकारी बनी हो। यह भी श्रेष्ठ पार्ट ड्रामा में सभी का नहीं हो सकता है।

(कमलसुंदरी बहन) ज्ञानी तू आत्मा हो वा ध्यानी तू आत्मा वा योगी तू आत्मा हो? तीनों रूपों से सर्विस में सहयोगी बनती हो। यह भी एक विशेष लिफ्ट है वा गिफ्ट है। अब तो प्रतिदिन ज्ञान की सर्विस भी योग के द्वारा ही होगी। ज्ञान की एक ही बात को बताकर योग में बिठा दिया - यह विधि भाषण से श्रेष्ठ है। अब ऐसी सर्विस का नया तरीका शुरू करो।

(ऑलराउन्डर बहन) सर्व गुण और सर्व सम्बन्धों में सम्पन्न - यह है ऑलराउन्डर का कर्तव्य। कोई भी कमी न रहे, तब कमाल देखने में आये। अभी कमियों के कारण कमाल रूकी हुई है। अब अपनी मनसा, वाचा, कर्मणा को कमाल योग्य बनाना है।

(ध्यानी बहन) ध्यानी हो वा महादानी हो? जो महादानी होते हैं वही महाराजा महारानी बनते हैं। महात्यागी ही महादानी बनते हैं। सभी से बडे ते बडा त्याग कौनसा है? अपनेपन (मैं - पन) का त्याग। त्याग दर्पण है, भाग्य को देखने का।

(मीठू बहन) इस बिन्दी को देखकर क्या याद आयेगा? एक तो बिन्दी आत्मा याद आयेगी। दूसरा इस बिन्दी को देखकर चन्दन की सुगन्ध याद आती। रचयिता और रचना दोनों ही चन्दन के समान खुश्बूयें फैलाने वाली। और तीसरी बात - यह बिन्दी चन्द्रमा समान शीतल बनाती है। मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों में विशेषता आती है तो श्रेष्ठता स्वत: ही आती है।

(शांतामणी बहन) जितना स्पष्टता होगी उतनी श्रेष्ठता आती है। समीप रत्नों की निशानी किससे मालूम पडेंगी? समानता से। बापदादा के संस्कारों की समानता से समीपता का मालूम पडता है। आदि रतन हो। वह अनादि गायन योग्य बनते हैं। क्योंकि आदिदेव के साथ मददगार हैं।

(गंगे बहन) समीप रतन ही सपूत रतन होते हैं। जितना समीप होते उतना बापदादा के हृदय में समाये हुए होते। अभी समान बनाने की मुख्य सर्विस शुरू करनी है। प्रजा बनाने की नहीं। यह सर्विस ही समय को समीप लायेंगी।

(रतनमोहिनी बहन) जितना स्नेही है उतना सहयोगी है। उतना शक्तिरूप भी है। इस समय डबल ताजधारी हो कि भविष्य में बनेंगे?

संगम पर डबल ताजधारी हो? एक है स्नेह का, दूसरा है सर्विस का। सर्विस का ताज है जिम्मेवारी का ताज। जो यहाँ डबल ताजधारी बनते हैं वह वहाँ भी डबल ताजधारी बनते हैं।

(बृजशान्ता बहन) बृज गली की हो और शांत स्वरूप। पुरूषार्थ और प्रालब्ध दोनों स्मृतियाँ। जो यहाँ सर्व बातों में साथ देते हैं वही वहाँ साथ रहते हैं। साथ रहेंगे साथ खेलेंगे।

(मनोहर बहन) आपकी विशेषता क्या है? सर्व के स्नेही और सहयोगी बनना यह विशेषता है। सर्व स्नेही कौन बनते हैं? जो सर्व त्यागी होते हैं। ऐसे श्रेष्ठ संकल्प वाले श्रेष्ठ पद के भागी बनते हैं। संकल्प में भी सर्व के कल्याण की भावना हो। ऐसे को बापदादा तथा सभी का सत्कार मिलता है। अच्छा।

(२०) अंतिम समय पर सावधानी

आत्माओं का आवाहन करना और बाप के समीप लाना यह पुरुषार्थ अभी रहा हुआ है। क्योंकि स्वयं भी आवाज से परे रहने की इच्छुक हैं, अभ्यासी नहीं है। जितना स्वयं आवाज से परे होकर संपूर्णता का आवाहन अपने में करेंगे उतना आत्माओं का आवाहन कर सकेंगे। अभी आवाहन करते भी हो लेकिन रिजल्ट आवागमन में हैं।

आवाहन के बाद आहुति बन जायें वह काम अभी करना है।

नॉलेज के तरफ आकर्षित होते हैं लेकिन नोलेजफुल के ऊपर आकर्षित करना है। अभी तक मास्टर रचयिता कहाँ-कहाँ रचना के आकर्षण में आकर्षित हो जाते हैं। अभी तक शक्तिरूप, शूरवीरता का स्वरूप नैनों और चैनों में नहीं है। शक्ति वा शूरवीरता की सूरत ऐसी दिखाई दे जो कोई भी आसुरी लक्षण हिम्मत ना रख सके। लेकिन अभी तक आसुरी लक्षण के साथ-साथ आसुरी लक्षण वाले कहाँ कहाँ आकर्षित कर लेते हैं। माया के भिन्न-भिन्न रूपों को परख न सकने के कारण हार हो जाती है।

अब समय बीत चुका। अब कारण नहीं सुनेंगे। कारण देना गोया अपने को कारागार में दाखिल करना है। अभी थोडे समय के अंदर धर्मराज का रूप प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे। क्योंकि अब अन्तिम समय है। अभी रियायत का समय गया, अभी रूहानियत का समय है।

बचपन की भूलें, अलबेलापन की भूलें, आलस्य की भूलें, बेपरवाही की भूलें रही हुई हैं। इन चार प्रकार की भूलों को ऐसे भूल जाओ जैसे सतयुगी दुनिया में भूल जायेंगे। तो ऐसी पावरफुल शक्ति स्वरूप, शस्त्रधारी स्वरूप, सदा जागती ज्योति स्वरूप अपना प्रत्यक्ष रूप दिखाओ। अभी आपके अपने अपने भक्त आप गुप्त वेषधारी देवताओं को फिर से पाने के लिये तड़प रहे हैं।

(२१) फाइनल पेपर

फाइनल पेपर में चारों ओर की हलचल होगी। वायुमंडल की, व्यक्तिओं की, सर्व संबंधों की और आवश्यक साधनों के अप्राप्ति की हलचल। ऐसे चारों तरफ की हलचल के बीच अचल रहना - यही फाइनल पेपर है। परिस्थिति के आधार पर स्थिति व किसी भी प्रकार के साधनों के आधार पर सफलता होगी तो ऐसा पुरूषार्थ फाइनल पेपर में फेल कर देगा। इसलिये बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का पुरूषार्थ तीव्रगति से करो।

(२२) ड्रामा का ज्ञान - वन्डरफुल!

सृष्टि रूपी ड्रामा ५००० वर्ष के बाद हू-ब-हू रीपीट होता है। यह अनगिनत बार पुनरावृत हो चुका है। हम जो अभी पार्ट प्ले कर रहे हैं, वो हमने पहले भी प्ले किया है, अब वह रिपीट होता है। अत: मन की स्थिति ड्रामा की पटरी पर सीधी चलती रहे जरा भी हिले नहीं, यही है मनमनाभव - श्रेष्ठ अवस्था। प्यारे बापदादा ने कहा है,

१. सृष्टि एक खेल है, माया की परीक्षाओं को भी खेल समज़ो।

२. नाटक में भी तूफ़ान - बाढ- खूनी नाहक खेल सब देखते हैं ना, लेकिन विचलित होते हैं क्या? क्योंकि समझते हैं कि यह ड्रामा है। ऐसे ही साक्षी होकर, नथींग न्यू समझ जो परिस्थितियाँ आती हैं, सब अचल अडोल हो देखते रहो।

३. जहाँ निश्चय है वहाँ विजय होगी। सिर्फ बाप में निश्चय नहीं, लेकिन अपने आप में निश्चय, ब्राह्मण परिवार में निश्चय, ड्रामा के हर दृश्य में निश्चय। जो हो रहा है, वह अच्छा ही है, जो हुआ सो अच्छा हुआ, जो होने वाला है वह भी कल्याणकारी ही होगा। "निश्चय बुद्धि विजयी" - यह सदा स्मृतिमें रहे।

४. संगमयुग का नाम है - कल्याणकारी युग। इसमें ब्राह्मण आत्माओं का अकल्याण हो ही नहीं सकता क्योंकि स्वयम् बाप कल्याणकारी मिला है। कल्याण ही कल्याण है।

५. जब मालूम पडा कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, होवनहार देवी-देवता हूँ, तो श्रेष्ठ आत्मा के संकल्प, बोल, कर्म श्रेष्ठ ही होंगे ना?

६. अचल रहने का साधन है - अमृतवेले तीन बिन्दीओं का तिलक लगाओ। बिन्दी है ब्रेक - सेफ्टी का साधन। गाडी चलाने में अगर समय पर ब्रेक न लगाओ तो फायदा होगा या नुकसान? "नथींग न्यू" का फूलस्टोप लगाकर, साक्षी होकर देख आगे बढते रहो।

७. परिस्थितियाँ आती हैं - आगे बढाने के लिये। इसलिये परीक्षा से गभराओ नहीं।

मूर्ति बनाने के लिए हथौडे के प्रहार जरूरी है। सदैव समज़ो, परिस्थितियाँ परिपक्व बनाने आई हैं। इसमें दिलशिकस्त होना, हलचल में आना निश्चयबुद्धि की निशानी नहीं है। हिम्मत रखो तो बाप मदद देने के लिए बंधायमान है।

८. आजकल साइंस के साधन से भी वेस्ट माल को परिवर्तन कर बेस्ट बना लेते हैं। तो प्रसन्नचित्त आत्मा साइलेन्स की शक्ति से चाहे बात बुरी हो, सम्बन्ध बुरे अनुभव होते हो लेकिन वह बुराई को अच्छाई में परिवर्तन कर स्वयं में भी धारण करेगी और दूसरों को अपनी शुभ-भावना व श्रेष्ठ संकल्प से बुराई को बदल अच्छाई धारण करने की शक्ति देगी।

९. कितना भी बडा विघ्न हो, विघ्नविनाशक आत्मा उसे खेल समजकर खुशी खुशी से विजयी बनेंगे। उपर विमान से नीचे की चीज कितनी भी बडी हो - छोटी सी दिखाई देगी। ऐसे आप - उपराम होकर साक्षी-दृष्टा की ऊंची स्थिति से देखेंगे तो बडी से बडी समस्या चींटी मिसल दिखाई देगी। इसमें साथी की स्मृति को सदा साथ रखना है।

११. आत्मा में हर जन्म के संस्कारों का रिकार्ड वर्तमान संगम समय में भर रहे हो। रिकार्ड भरते समय अटेन्शन रखा जाता है। अगर किसी भी प्रकार का टेन्शन होता है तो रिकार्ड ठीक नहीं भर सकेगा। इसलिये हर प्रकार के टेन्शन से परे, स्वयम् और समय का बाप के साथ का अटेन्शन रखते हुए, सेकन्ड सेकन्ड का पार्ट श्रेष्ठ बजाओ।

१२. निश्चयबुद्धि की निशानी है सदा निश्चिंत। जो निश्चिंत होंगे, वही एकरस रहेंगे। जो कुछ भी हुआ, सोचो नहीं। क्यों, क्या में कभी भी नहीं जाओ। त्रिकालदर्शी बन निश्चिंत रहो। हर कदम में कल्याण है। जिस बात में अकल्याण भी दिखाई देता है, उसमें भी कल्याण समाया हुआ है। सिर्फ अंतर्मुखी होकर देखो।

१३. कभी परेशान तो नहीं होते हो? कभी ब्राह्मणों से, कभी वातावरण से परेशान होते हो? अगर अपने शान से परे होते हो तो परेशान होते हो। साक्षीपन की सीट शान की सीट है। इससे परे न हो तो परेशानी खत्म हो जायेगी। जब त्रिकालदर्शी नॉलेजफुल बाप के त्रिकालदर्शी बच्चे बन गये तो परेशान कैसे हो सकते हो?

१४. लौकिक में देखो, बिन्दी से ही संख्या बढती है। एक के आगे बिन्दी लगाओ तो क्या हो जाता? १०, दो बिन्दी तो १००, तीन बिन्दी, चार बिन्दी लगाओ तो बढता ही जाता है। वैसे "मैं आत्मा हूँ" यह स्मृति की बिन्दी लगाना अर्थात् खजाना जमा होना। फिर बाप बिन्दी लगाओ और खजाना जमा। कर्म में, सम्बन्ध-संपर्क में ड्रामा का फूलस्टोप लगाओ, बीती को फूलस्टोप लगाया और खजाना बढजाता। बिन्दी लगाना कितना सहज है, मुश्किल है क्या?

१५. बाप समान बनने की विधि है ही बिन्दी। अगर विदेही बनना है, अशरीरी बनना है, कर्मातीत बनना है तो सबकी विधि है - बिन्दी बनना।

(२३) सृष्टिचक्र रूपी महालिला का राज़

बेहद विश्व के इस रंगमंच पर जिस महालिला का हमें दर्शन होता है, उसके सभी पात्र यवनिका (रंगमंच का परदा) के पृष्ठ भाग में पहले से ही उपस्थित रहते हैं। अनंत काल से अभिनय की मोहक यात्रा, जीवन में अनेकानेक कटु-मृदु अनुभव से प्राणों को स्पंदित करती रहती है। घात-प्रतिघात, उत्थान-पतन, संहार-सृजन आदि की न जाने कितनी कथा-यात्राओं अतीत के स्मृति प्रदेश को आंदोलित करती रहती हैं। सृष्टिचक्र में होने वाली इस महालिला का निर्णायक बिन्दु कहाँ है? - किसी को पता नहीं।

नियति अर्थात् इस सृष्टिचक्र रूपी महालिला या बेहद के नाटक में जो हुआ था, हो रहा है और होगा - वह पूर्व नियोजित है। यह लीला या ड्रामा बना बनाया है, जो हू-ब-हू पांच हजार वर्ष में रीपीट होता रहता है। इस के परिवर्तन में व्यक्ति स्वतंत्र नहीं है।

विश्व की विशाल पृष्ठभूमि पर जो घटना अतीत में घटी है, वर्तमान में घट रही है और भविष्य में घटेगी - वह सब पूर्व नियोजित है। ड्रामा का यह राज त्रैकालिक सत्य है। इस सत्य को प्रगट करने के लिये कई शब्द है; जैसे संयोग ही ऐसा था, होनी सो होय, होवनहार था सो हुआ, प्रालब्ध में जो लिखा था, भाग्य में यही था, ड्रामा में जो था हुआ। कुदरत की यह लीला निरंतर अविराम चलती ही रहती है। ज्ञान की परिपक्वता के अभाव में व्यक्ति यही कहता है कि यह मैंने किया। यह मेरा परिवार, यह मेरी संपत्ति, यह मेरी कारकीर्दि, यह मेरे कारण हुआ। मैं न होता तो यह नहीं होता। न जाने कितने व्यर्थ दायित्व का शूद्र अहम् अपने पर लादे रहता है! लेकिन पूर्व नियति की प्रक्रिया में ही सबको चलना है। भूत, वर्तमान और भविष्य की सारी क्रियायें अदृश्य शक्तियों के कारण संचालित होती रहती है, जिसे दार्शनिक चिंतन की भाषा में नियति लीला या खेल कहते हैं।

ज्ञानी तु आत्मा या साधक कर्ताभाव से नहीं लेकिन साक्षीभाव से घटते प्रवाह को एकरस दृष्टि से निहारता रहता है। जीवन-मृत्यु की क्रियायें, जड़-चेतन में जो भी परिवर्तन होता है, जीवन में जो भी सुख-दु:ख या समस्याओं और भाव, संकल्प या स्वभाव के रूप में प्रकम्पन उठते हैं यह सब पूर्व नियत हैं, चाहे वह अनुकूल हो या प्रतिकूल। जो हो रहा है वह होकर ही रहता है क्योंकि यह सबकुछ नियति की क्रमबद्ध व्यवस्था है। व्यक्ति निमित्त मात्र है।

कई लोगों को आगे होनेवाली घटनाओं का पूर्वाभास स्वप्नावस्था में हो जाया करता है। योगियों की जीवन में ध्यान के क्षणों में भावी में होनेवाली घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है। ४०० वर्ष पहले नास्त्रेदमस ने भविष्यवाणी लिखी थी वह प्राय: सही निकली है। यह पूर्व नियोजित नियति नहीं तो क्या है?

एक क्रूर घातकी व्यक्ति अचानक छोटी सी घटना से करुणामूर्ति बन जाता है। (उदाहरण - वालिया लुटारा का ऋषि वाल्मिकी में परिवर्तन तथा अंगुलीमान का बोधि श्रमण रूप में बदलाव)। जीवन बदलना हो तो क्षण में बदल जाता है वरना वर्षो लग जाने पर भी बदलाव नहीं आता। बिना पुरुषार्थ के इतना बडा परिवर्तन नियति

नहीं तो और क्या है? नियति (ड्रामा) की समझ व्यक्ति को आलसी नहीं कर्मशाली बनाती है। नियति का मनन-चिंतन व्यक्ति को तनाव से मुक्त और निश्चिंत कर देता है। वह "नथिंग न्यू" - "पहले भी ऐसा ही हुआ था" या "प्रालब्ध में जो था, वही हुआ" - इसी समझसे प्रतिशोध, बदला लेने के भाव, नफरत, राग, द्वेष या इर्ष्या भाव से मुक्त-हल्का रहता है। वह बीती बातों के चिंतन में व्यर्थ समय और शक्ति वेस्ट नहीं करता। नियति और ईश्वर पर उसकी आस्था दृढहोने से वह स्थितप्रज्ञ की अवस्था का सुख अनुभव करता है।

सृष्टि एक विराट रंगमंच है जहाँ विविधतापूर्ण मनोरंजक नाटक चल रहा है। नाटक का आनंद लेने के लिये साक्षीभाव आवश्यक है। जिससे हम तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं वह "संसार" बन जाता है और जिससे हम साक्षीभाव रखते हैं वह "नाटक" हो जाता है। इतना ही तो अंतर है संसार और नाटक में। यह अंतर मूलत: दृष्टिकोण का है।तादात्म्य (मोह) या आसक्ति की मनोवृति होने से संसार दु:खदायक, जटिल और जंजाल मालूम पडता है और साक्षी तथा अनासक्ति की मनोवृति होने से आनंददायक नाटक अनुभव होगा।

अत: परिस्थिति को नहीं स्वस्थिति को बदलने का पुरुषार्थ करना है। नाटक या फिल्म के कल्पित पात्रों से तादात्म्य (अपनापन) स्थापित कर लेने के कारण कितने लोग थियेटर होल में आँसू बहाते हैं तथा भारी कदमसे बाहर निकलते हैं। जबकि नाटक के पात्र को तो पता रहता है कि वह जो भी अभिनय कर रहा है, उससे स्वयं अलग है। परिणाम स्वरूप वह पात्र के सुख-दु:ख के खेल को अभिनय मात्र समझ अनासक्त रह अभिनय का आनंद लेता है। वस्तुत: हम आत्माओं भी इस सृष्टि नाटक से परे ब्रह्मलोक (परमधाम) की रहने वाली हैं - ज्योतिर्बिन्दु रूप आत्माओं हैं। इस सृष्टि रूपी नाटक में हम शरीर धारण कर जो भी खेल खेल रही हैं वह सिर्फ अभिनय है। इसी समझ से साक्षीभाव धारण करनेवाला मनुष्य कठिन से कठिन परिस्थिति में भी चलायमान नहीं होगा परंतु अचल-अडोल एकरस स्थिति में रह आनन्द स्वरूप का अनुभव करेगा।

(२४) निश्चय बुद्धि अर्थात् नशे का जीवन

रूहानी नशा निश्चय का दर्पण स्वरूप है। निश्चय सिर्फ बुद्धि में स्मृति तक नहीं लेकिन हर कदम में, रूहानी नशे के रूप में, कर्म द्वारा प्रत्यक्ष स्वरूप में स्वयम् को और ओरों को भी अनुभव होता है। यह ज्ञानी और योगी जीवन सिर्फ सुनने, सुनाने तक नहीं, जीवन बनाने का है। रूहानी नशे वाली आत्मा का हर संकल्प, बोल, कर्म तीनों से नशा अनुभव होगा। जैसा नशा वैसी खुशी की झलक चेहरे से चलन से प्रत्यक्ष होगी। निश्चय का प्रमाण नशा और नशे का प्रमाण खुशी।

एक नशा है अशरीरी आत्मिक स्मृति का (जिसमें आत्मा के हर गुण और हर शक्ति प्रेक्टिकल में दिखाई दे।) दूसरा नशा है संगमयुग का अलौकिक जीवन। (ब्राह्मण जीवन श्रेष्ठ जीवन, परमात्मा की संतान, परमात्मा के समीप, साथी, संपन्न और संपूर्ण जीवन) तीसरा नशा है फरिश्ते पन का नशा (जिसका बुद्धिरूपी पाँव इस कलियुगी संसार और पुराने संस्कार से उठ चुका है, सदा उपराम, न्यारा और प्यारा, बाप के विश्वपरिवर्तन कार्य में साथ निभानेवाला, डबल लाइट-माइट स्वरूप) चौथा है भविष्य का नशा (सतोप्रधान, सोलह कला संपूर्ण, सर्वगुण संपन्न, दैवीपद का नशा) इन चारों ही प्रकार के अलौकिक नशे में से कोई भी नशा जीवन में होगा तो स्वत: ही खुशी में नाचते रहेंगे। निश्चय भी है लेकिन खुशी नहीं है, इसका कारण नशा नहीं है। नशा सहज ही पुराना संसार और पुराना संस्कार भुला देता है। इस पुरुषार्थी जीवन में विशेष विघ्नरूप दो बाते हैं - चाहे पुराना संसार वा पुराना संस्कार। लौकिक संसार भूल जाते हैं लेकिन पुराने संस्कार नहीं भूलते। तो संस्कार परिवर्तन का साधन है, इन चार ही नशे में से कोई भी नशा साकार स्वरूप में हो। सिर्फ संकल्प रूप में नहीं संकल्प रूप में अर्थात् नॉलेज के रूप में बुद्धि तक धारण किया है, इसलिये कभी भी किसी का पुराना संस्कार (इर्ष्या, निंदा, राग-द्वेष, मेरा-तेरा, अनुमान, अहम्-वहम्, परचिंतन, परदर्शन, परपंच इत्यादि...) इमर्ज हो जाता है। "मैं सब समझती हूँ, मुझे बदलना है यह भी समझते हैं" तो समझ तक नहीं, कर्म अर्थात् जीवन तक परिवर्तन। अनुभव में आवे।

अभी बुद्धि तक पॉइन्ट्स के रूप में सोचने और वर्णन तक है। लेकिन हर कर्म में सम्पर्क में परिवर्तन दिखाई दे - इसको कहा जाता है साकार रूप में अलौकिक नशा। अभी हर नशे को जीवन में लाओ। कोई भी आपके मस्तक तरफ देखें तो मस्तक द्वारा रूहानी नशे की वृत्ति अनुभव हो। वृत्ति वायुमंडल और वाइब्रेशन फैलाती है। आपकी वृत्ति (त्याग-तपस्या-वैराग्य वृत्ति, कल्याण की वृत्ति, परोपकार, करुणा, सहयोग और सेवा की वृत्ति इत्यादि....) दूसरों को भी वायुमंडल में खुशी के वायब्रेशन अनुभव करावे - इसको कहा जाता है नशे में स्थित होना। ऐसे ही दृष्टि से, मुस्कान से, मधुर बोल से, रूहानी नशे का साकार रूप अनुभव हो। तब कहेंगे नशे में रहने वाले निश्चय बुद्धि विजयी रत्न।

(२५) ज्ञान - मोतियों की माला

१. कायर तथा दुर्बल व्यक्ति ही पापाचरण करते हैं, एवम् झूठ बोलते हैं। साहसी तथा शक्तिशाली व्यक्ति नीतिपरायण होते हैं। अतः नीतिपरायण, साहसी तथा सहानुभूति सम्पन्न बनने का प्रयास करो।

- स्वामी विवेकानंद।

२. सुंदरता से बढकर चारित्र्य है, प्रेम से बढकर त्याग है, दौलत से बढकर मानवता है, परंतु निःस्वार्थ रिश्तों से बढकर सुंदर इस दुनिया में कुछ भी नहीं है।

३. समय, शक्ति और धन जीवन में हर पल साथ नहीं देंगे, परंतु अच्छा स्वभाव, अच्छी समज (विवेक), आध्यात्मिक राह और सच्ची धगश सदा साथ देंगे।

४. हममें से हर किसी में अच्छाई व बुराई दोनों ही होती हैं। जो अच्छाई पर ध्यान देने का निर्णय लेते हैं, वोही जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं।

५. खुश रहने का तरीका...

न किसी से अपेक्षा, न किसी की उपेक्षा।

न किसी से शिकायत, न किसी से महोब्बत,

न किसी से चाहत, न किसी से नफरत।

६. जहाँ हमारा स्वार्थ समाप्त होता है, वहीं से हमारी इन्सानियत का आरंभ होता है।

७. जीवन में किसी के प्रति की गई भलाई व्यर्थ नहीं जाती। वह कब किस रूप में आपके पास लौट कर आयेगी यह सिर्फ ईश्वर जानते हैं।

८. वक्त - जैसा भी हो बदलता जरूर है। इसलिये अच्छे वक्त में कोई ऐसी गलती न करें जिससे बुरे वक्त में अच्छे लोग आपका साथ छोड दे।

९. प्रश्न :- मनसा, वाचा, कर्मणा - तीनों ही व्यक्त में होते अव्यक्त रहे इसके लिये एक शब्द बताओ?

उत्तर :- अपने को मेहमान समझना। मेहमान का किसीके साथ भी लगाव नहीं होता है। हम इस शरीर में भी महेमान हैं। इस पुरानी दुनिया में भी मेहमान है। दोनों विनाशी हैं फिर लगाव क्या रखना? जितना यहाँ मेहमान बनेंगे फिर उतना ही वहाँ विश्व का मालिक बनेंगे।

(२६) समीप और श्रेष्ठ रत्न

दिन प्रतिदिन ऐसे अनुभव करेंगे जैसे इस जन्म में प्रत्यक्ष देखी हुई बातें स्पष्ट रूप में इमर्ज रहती हैं, वैसे भविष्य राजाई के संस्कार जो आत्मा में समाये हुअे हैं, वह जैसे कल की देखी हुई बात है। ऐसा अनुभव प्रत्यक्ष रूप में करते रहेंगे। इससे समझना अब हम अपनी सम्पूर्ण स्थिति और अपने राज्य के समीप पहुँच गये हैं। सतयुगी संस्कार सोचने वा स्मृति में लाने से नहीं, लेकिन स्वत: ही और स्पष्ट रीति जीवन में आते रहेंगे। इस दुनिया में रहते हुए भी नयनों में सतयुगी नज़ारे दिखाई देंगे। न सिर्फ इतना, लेकिन अपना भविष्य स्वरूप जो धारण करना है वह भी आँखों के आगे बार-बार स्पष्ट दिखाई देगा। बस, अभी-अभी यह छोड वह सजा-सजाया चोला धारण करना है - ऐसे अनुभव करते रहेंगे। इस संगम पर ही सतयुगी स्वरूप का अनुभव करेंगे। जैसे साइंस के साधन से दूर की चीज भी समीप और स्पष्ट दिखाई

पडती है, जिसको दूरबीन कहते हैं। तो आपका तीसरा नेत्र कल्प पहले की बातें समीप और स्पष्ट देखेगा वा अनुभव करेगा। सदैव बुद्धि में बापदादा की स्मृति व निशाना और आने वाले राज्य के नज़ारे, नयनों में और मुख में सदा बापदादा का नाम हो इसको कहते हैं समीप और श्रेष्ठ रत्न।

(२७) मैंने बाबा को नजदीक से देखा था

- दादी जानकीजी

बाबा बहुत अन्तर्मुखी रहते थे। लगभग ३०, ३२ वर्षो तक बाबा को देखा। जैसे ही बाबा से सुनना शुरू किया तो लगा, बुद्धि दिव्य बन रही है और तीसरा नेत्र भी खुल रहा है। उनकी दृष्टि से न्यारा होना सरल हो गया।

बाबा को एक धक से त्याग करते देख मन में आया, मुझे भी मन से ऐसे ही त्याग करना है। बाबा काम कर रहे हैं पर मूर्ति तपस्वी की है। कितने न्यारे और प्यारे थे हमारे बाबा। हमको भी न्यारे रहने की ट्रेनिंग बाबा ने ही दी। इतनी सारी जिम्मेवारियाँ होते भी कभी हमने बाबा को चिंता-फिक्र में नहीं देखा। दिन-रात शिवबाबा की स्मृति में रह हमको भी याद में रहने के लिये कितने अच्छे वायब्रेशन देते थे। ब्रह्माकुमारीज में जो सब मुस्कुराते दिखाई देते हैं ना, यह बाबा की ट्रेनिंग है। बच्चे सदा मुस्कुराते रहो। लोगों की तरह बहुत हंसना और फिर रोना छोड दो। यह देह-अभिमान है। हर कदम श्वास-श्वास में बाबा ने स्व पर अटेन्शन खिचवाया। संसार में जो कुछ भी होता था, बाबा पर कोई असर नहीं होता था। बाबा ने न महिमा स्वीकार की न ग्लानि। बाबा कहते थे बच्चे निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सो होय। बाबा ने शत्रु को भी मित्र समजा और उसका भला चाहा।

सच्चा दिल, साफ दिल, बडा दिल क्या होता है, वह बाबा में देखा है। लाखों इन्सानों को देखा होगा, आज के युग में इन्सान सच बोले यह मुश्किल है पर बाबा को रिंचक मात्र भी मिलावट वाला बोल बोलते नहीं देखा। एकदम ताकत वाली सच बोला बाबाने, जिस कारण हम कुर्बान हो गये। सत्य की शक्ति से बहुत ऊंचा उठ सकते हैं।

बाबा के प्यार में भी बहुत शक्ति है।

मैंने बाबा में क्षमाभाव बहुत देखा। बाबा के पास आये तो हमारे पास्ट कर्मों को उन्होंने क्षमा कर दिया। जब आत्मा साफ-बेदाग हो जाती है तो आत्मभाव में टिकना सरल हो जाता है। इतनी उच्च ऑथोरिटी और नम्रता कितनी! अपने को सदा सेवाधारी - वर्ल्ड सर्वन्ट समजा।

माँ-बाप-सखा सब रिश्तों का अनुभव बाबा ने कराया। कितनी महिमा करूँ - भाग्यविधाता बापदादा की।

(२८) वो दिन भूल नहीं सकते

- बी. के जगदीशभाई

मैं यह समझता हूँ कि मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ। कई दफा गद्‌गद्‌ हो जाता है मन। रात को नींद तूट जाती है। वो बाबा और मम्मा की मूरत सामने आ जाती है। सृष्टि के आदिपिता ब्रह्मा, जिन को सब धर्म वाले भी आदिपिता मानते हैं, उन के अंग-संग रहने का मौका मुझे मिला। उन्होंने अपने हाथों से प्यार और दुलार किया। वो दिन कैसे थे! बार-बार याद आता है कि वो कैसे प्यारे नज़ारे थे।

दो-ढाई फुट की एक छोटी सी टेबल थी, जिस पर बाबा खाना रखते थे अपने कमरे में। कहते थे बच्चे, आओ, खाना खाओ। अपने हाथो से खिला रहे हैं वो दिन भूल नहीं सकते। बाबा दृष्टि दे रहे हैं। मन कहता है, आँखे तो बिछी हुई हैं उस पिया की याद में। मन करता है कि अखियाँ झपकें नहीं, अपलक होकर देखती रहें।

एक सौभाग्य मिला उन सबसे मिलने का, बाबा की जो लौकिक धर्मपत्नी थी उनके साथ बैठकर हमने बाबा की सारी बातें सुनी। एक अजीब बात देखी कि अज्ञानकाल में जिसको पति के रूप में देखा करती थी, उसको वह बाबा कहती है। बाबा की लौकिक बहू बृजेन्द्रा दादी थी वह भी बाबा को कभी ससुर के रूप में देखा करती थी, अब वह भी बाबा बोलती है। उनकी लौकिक बच्ची निर्मलशांता और एक लौकिक बहन से भी बाबा की बातें सुनीं, वे भी बाबा कहती थीं। मम्मा की लौकिक माँ

अपनी बेटी को माँ कहकर बुलाती थी। मुझे आश्चर्य लगा, यहाँ सब आत्मिक नाते से व्यवहार करते थे। वो सब हो गए हैं, लेकिन बाबा, मम्मा और दादियों के साथ जो दिन गुजारे वो तो फिर नहीं आअेंगे। हमें तो उन दिनों की याद आती है।

जब कभी साकार के साथ बिताये हुए दिन याद आते हैं, वो सारी फिल्म मन में घूम जाती है। वो ऐसे संस्मरण हैं, जो अनमोल हैं। मैंने भक्तिमार्ग के माध्यम से परमात्मा को खोजने के लिये सब धर्म के शास्त्र पढे, मंत्र, तंत्र, यज्ञ, हवन, माला, जाप, वेद, पुराण शास्त्र, चर्च, मस्जिद सब किया। एक खोज थी, कसक थी कि परमात्मा को पाना है - इसी जीवन में। कितनी मेहनत मुझे शिवबाबा को प्राप्त करने के लिये करनी पडी। मेरे जिगर से निकलना है, वो मेरा सिकिलधा पिता है, सिकिलधी माँ है। मुझ आत्मा के उनके साथ सर्व संबंध है। जब मैं आया, बाबा का प्यार मुझसे कितना था! मैंने अपने को ऑफर किया कि जीवन का लक्ष्य मुझे मिल गया, मैं ईश्वरीय सेवा में समर्पित हो गया। फिर बाबा ने भी मुझे बहुत प्यार से उठाया, सेवा दी, दिशानिर्देश दिये। जब मैं बाबा के पास जाता था, बाबा कहते, जब तुम आते हो शिव बाबा इस तन में आता है। लाइट से घिरे हुए - ऊंची अवस्था में हम दोनों बातें करते। मन बहुत गद्‌गद्‌ रहता।

(२९) याद कैसे सहज हो?

- ✶ सदैव समझो - बाबा मेरे साथ ही है। साधारण कर्म करते हुए भी अव्यक्त स्थिति बनाने का अटेन्शन रहे।
- ✶ बापदादा को अपना साथी (दोस्त) समजकर डबल फोर्स से कार्य करो। स्वयम् अकेला मत समजो, तो याद सहज रहेगी।
- ✶ सर्वशक्तिमान बाप का संग होने से कर्तव्य में सफलता प्राप्त होगी। इससे सहज याद रहेगी, डबल फोर्स होगा और उमंग-उत्साह में रहेंगे। सर्व से सहयोग की प्राप्ति होगी। व्यर्थ संकल्प, वाणी और व्यर्थ समय गॅवाने से मुक्ति मिलेगी। फरिश्ता स्थिति की प्राप्ति करनी है तो बाप और दादा दोनों से पक्का रिश्ता हो।

एक के साथ सर्व रिश्ते हैं तो सहज और सदा फरिश्ते हैं और है भी क्या इस संसार में? जहॉ बुद्धि जाये? अभी कुछ रहा है क्या?

✶ संसार के विनाशी सब संबंध वा रिश्ते और माया के रास्ते ब्लोक कर दिये हैं वा नहीं? अभी भी मन डूबता है - व्यक्ति या वस्तु में?

✶ याद क्या है? बाप के कर्मों वा गुणों द्वारा बाप की याद आप लोग मुश्किल बना देते हो। सहज तरीका है - पहले इन सभी रास्तों को बंध (ब्लोक) कर दो - जहॉं मन भटकता हो - एक के रस में लवलीन हो जाओ। मन को समजा दो कि भटकने से क्या मिला? फिर मुश्किलों से छूट जाओंगे।

✶ अब बीती सो बीती करो। मुर्दा बातों को कब्र खोदकर बाहर मत निकालो। यह नया जन्म मरजीवा जन्म है। पुराने स्वभाव-संस्कार मर्ज हो गये और नये जन्म के संस्कारों को मैं सदा बाप के संग संग हूँ। एक सेकन्ड भी बाप से अपने को अलग न समज़ो।

✶ सदैव समज़ो बाप के हाथ (श्रीमत रूपी हाथ) में मेरा हाथ है और बाप का साथ (स्मृति रुपी साथ) सदैव है। तभी बेफिक्र रहेंगे।

✶ सब फिक्र बाप को सौंप दो। सब जिम्मेवारी उनकी। बोझ बाप के ऊपर रख हल्का-लाइट हो जाओ।

✶ हल्का होने का साधन - बाप का हाथ और साथ। फिर चाहे बाप (शिवबाबा) स्मृति में आये, चाहे दादा। दोनों है ही साथ-साथ बापदादा। साकार स्नेह भी सर्व लौकिक स्नेही संबंधीओं से बुद्धियोग तोड देता है। साकार से फिर निराकार तरफ बुद्धियोग स्वत: ही जायेगा।

✶ यथार्थ याद है - निरंतर सहजयोगी बनना। दो-चार-आठ घंटे वाला योग नहीं - योगी जीवन हो।

✶ एक है डायरेक्ट विकर्म विनाश की स्टेज - बिन्दू स्वरूप। दूसरी है धीरे धीरे विकर्म विनाश हो। जितना शुद्ध संकल्प, शुद्ध भावना और मनन चिन्तन से

अपनी बुद्धि बिझी रखते हो, उनसे शक्तियाँ जमा होती जायेगी और किचड़ा (विकर्म) समाप्त होता जायेगा।

- ✶ "अभी चढ़ती कला का समय है" - यह स्मृति सदा रहे। मुझे निमित्त बनानेवाला - करावनहार कौन? यह सदा स्मृति रखो।
- ✶ साक्षी योकर न्यारा-प्यारा (डिटेच), उपराम स्थिति में रह पार्ट बजाओ - जैसे संसार रूपी सरोवर में कमल समान।
- ✶ सिर्फ कोर्स देने से प्रजा बनती है। फोर्स देने से समीप संबंध में आते हैं और वारिस बनते हैं।
- ✶ यहाँ सहज योगी जीवन, वहाँ (सतयुग में) सहज राज्य अधिकारी बनेंगे। दैवी और स्वराज्य अधिकारी (इन्द्रिय जीत) के संस्कार यहाँ भरेंगे तब जाकर वहाँ पार्ट बजाअेंगे।
- ✶ अभी स्वयम् में देवताई संस्कार प्रत्यक्ष करो तो साक्षात्कारमूर्त हो जाअेंगे। बाबा पूछते हैं; भक्त जनों के दु:ख दर्द की पुकार सुनाई देती है? हे चैतन्य मूर्तियाँ, कब भक्तों के दु:ख दर्द दूर करेंगे? "अब नहीं तो कब नहीं" यह स्लोगन आपके लिए ही है। समझा?

(३०) विनाश ज्वाला प्रज्जवलित कब और कैसे होगी?

विनाश ज्वाला प्रज्जवलित करने में कौन निमित्त बनेगा? क्या शंकर निमित्त बनेगा या बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बनेंगे? जब से स्थापना के कार्य अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-साथ यज्ञ कुंड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई। तो विनाश ज्वाला प्रज्जवलित करने में बाप और आप साथ साथ हो। अब ज्वाला रूप बनकर विनाश ज्वाला को तेज करने का संकल्प करो।

बेहद के विनाश स्वरूप की तीव्र सर्विस के साथ साथ बेहद की उपराम वृत्ति भी तीव्र चाहिये। जब विश्व की आत्माओं में वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होगी तब वैराग्य के बाद समाप्ति होगी। इसके लिये कर्म करते हुए अकर्ता, संबंध-संपर्क में रहते हुए

कर्मातीत। कोई भी लगाव न हो- न व्यक्ति से, न साधनों से, न सर्विस से, सर्विस निमित्त भाव से हो। मैं और मेरापन समाप्त हो। ऐसे स्वयं को समेटकर एवररेडी बनाया तो विनाश भी रेडी हो जाएगा। बाबा बच्चों से पूछते हैं - "किस के रोके, रुका है सवेरा?" अर्थात् सतयुग का स्वर्णोदय किसके कारण रूका है?

जैसे दु:खी आत्माओं के मन से यह आवाज निकलता है कि अब जल्दी विनाश हो, वैसे ही आप विश्वकल्याणकारी आत्माओं के मन से यह संकल्प उत्पन्न हो कि अब जल्दी ही सर्व का कल्याण हो, तब समाप्ति होगी। जब तक आप ज्वालारूप न बने तब तक विनाशकारीओं को इशारा मिल न सके। विश्वपरिवर्तन, यह है आप के लास्ट शक्ति स्वरूप का कर्तव्य। इसलिये स्वयं को शक्ति स्वरूप - लाइट और माइट हाउस बनाओ। संगठन को मजबूत बनाओ। सारे संगठन का एक ही संकल्प चाहिए - अब हम सब एवररेडी हैं और नई दुनिया की स्थापना होनी ही चाहिये।

इस महायज्ञ में पुरानी दुनिया की आहुति पडने के वर्ष यज्ञ समाप्त होना है। लेकिन पुरानी दुनिया की आहुति तब पडेगी जब सभी अपने पुराने व्यर्थ संकल्प की सृष्टि को, अपने हद की सृष्टि को इस महायज्ञ में स्वाहा करेंगे। अंतिम आहुति है - मैं-पन समाप्त होना। इसलिये अपनी नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप की स्टेज बनाओ।

जब तक लगाव और स्वभाव की पूँछ को आग नहीं लगाई है, तब तक इस लंका (पुरानी सृष्टि) को आग नहीं लग सकती। जब सभी महावीरों में एक ही लगन की अग्नि जग जायेगी तब पुराना विश्वपरिवर्तन होगा।

जैसे विनाशकारी आत्माओं ने इन्वेन्शन कर रखी है जिससे शिघ्र ही विनाश हो जाए, ऐसे आप महावीर आत्माओं साइलेन्स की शक्ति के इन्वेन्टर ऐसा प्लेन बनाओ जिससे एक सेकन्ड में नजर से निहाल, दु:खी से सुखी, निर्बल से बलवान और अशांति से शांति का अनुभव करा सको। भारत का पार्ट सिविल वॉर का है। यहाँ बॉम्ब्स का असर नहीं होगा। ड्रामा की बनी हुई भावी को शक्तिशाली बन देखते हुए औरों को भी शक्ति और शांति का दान दो।

(३१) एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म

✶ अव्यक्त बापदादा ने ये तीन शब्द कहे हैं। उन तीनों का अलग-अलग अर्थ, राज़ और स्थिति जानना अति आवश्यक है क्योंकि इस विश्वनाटक में इस पुरुषोत्तम संगम समय का विशेष महत्व है।

✶ एडवान्स पार्टी अर्थात् जो आत्माअें इस ब्राह्मण जीवन के कर्तव्यों और पुरुषार्थ को पूर्ण करके कर्मातीत होकर गई हैं और उनको एडवान्स पार्टी में जाकर नये विश्व के नवनिर्माण के लिये आगे का कर्तव्य करना है, उसके लिए विधि-विधान बनाने हैं। उसमें मुख्य कर्तव्य है सत्युग में योगबल से जन्म देने का आविष्कार करना। क्योंकि स्वर्ग और नर्क को विभाजित करनेवाली यही मुख्य सीमा-रेखा है। योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति ही स्वर्ग और नर्क की स्थिति को स्पष्ट करती है, जिसके आधार पर स्वर्ग और नर्क का नाम पडता है। अर्थात् यह सृष्टिचक्र अमरलोक और मृत्युलोक के रूप में विभाजित होता है।

✶ एडवान्स स्टेज वाली वे आत्मायें हैं, जो वर्तमान ब्राह्मण जीवन में कर्मातीत स्थिति के निकट पहुँची हुई हैं या पहुँचने का तीव्र पुरुषार्थ कर रही हैं अर्थात् जो आत्माअें वर्तमान ब्राह्मण जीवन में ज्ञानयोग से सम्पन्न होकर एडवान्स पार्टी या एडवान्स जन्म में जाने की तैयारी कर रही हैं। वे अपनी दृष्टि-वृत्ति-स्थिति, मनसा-वाचा और कर्मणा द्वारा परमात्मा का संदेश देकर अन्य आत्माओं का जीवन परिवर्तन करने के परमात्म कार्य में सहयोगी हैं।

✶ एडवान्स जन्म अर्थात् सतयुग के आदि का जन्म। एडवान्स जन्म में आनेवाली आत्माअें एडवान्स पार्टी में भी हो सकती है और एडवान्स स्टेज वाली भी हो सकती है। एडवान्स जन्म वाली आत्माअें पहले परमात्मा पिता के साथ परमधाम जायेंगी और फिर आकर सतयुग के आदि में योगबल से जन्म लेंगी, जहाँ से नये कल्प अर्थात् स्वर्ग का आरंभ होगा।

✶ एडवान्स पार्टी वालों को नई दुनिया सतयुग के लिये तैयारी करनी है। एडवान्स जन्म लेने वालों के लिये योगबल से जन्म लेने की व्यवस्था करनी है। नई दुनिया

के नवनिर्माण के लिये साइन्स अेन्ड टेकनोलॉजी वाली आत्माओं को तैयार करना है।

एडवान्स स्टेज ही सारे कल्प में सर्वश्रेष्ठ स्टेज है, जो एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म का आधार है। वर्तमान संगमयुगी जीवन में यथार्थ ज्ञान की धारणा करके परमशांति, परमशक्ति परमानन्द, परमसुख का अनुभव करना और कराना ही एडवान्स स्टेज वालों की विशेषता और गुणधर्म है। इसमें ही उनकी महानता है।

वे देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर फरिश्ता रूप धारण कर अव्यक्त बापदादा के साथ विश्वकल्याण की सेवा करते हुए अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हैं। वे स्वयं को हर परिस्थिति में साक्षी और ट्रस्टी रूप में परमसुख अनुभव करते हैं।

(३२) संगम युग का समय

कलियुग के अन्त और सतयुग के बीच का समय संगमयुग का छोटा सा समय है। इस युग का आरंभ परमपिता परमात्मा के अवतरण और ब्रह्मामुख द्वारा नई सतयुगी दुनिया के लायक आत्माओं को ज्ञान और योग की शिक्षा देकर उनके संस्कार परिवर्तन द्वारा विश्वपरिवर्तन के कल्याणकारी कार्य से होता है। यह गुप्त कार्य १९३६ से प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा अविनाशी रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ (ॐ मंडली) की स्थापना द्वारा आरंभ हुआ।

यह कल्प का संगमयुग दो भागों में विभाजित है। एक पुराने कल्प का समय और दूसरा नये कल्प का समय। जब से परमपिता शिव परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं तब से संगम का समय आरंभ होता है और जब परमात्मा परमधाम जाते हैं तब विनाश का समय आरंभ होता है। अन्य आत्माअें भी अपने जन्म-जन्मांतर के पुराने कार्मिक हिसाब-किताब पूरे करके, परमात्मा के साथ परमधाम जाती हैं, तब तक का समय पुराने कल्प का संगम समय होता हैं। उसके बाद एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं का परमधाम से इस धरा पर आना आरंभ होता है। उनका जन्म योगबल से होता हैं। जब से योगबल से जन्म लेने की प्रथा आरंभ होती है तब से नये कल्प का

संगम समय आरंभ होता है और वह श्री लक्ष्मी - श्री नारायण के राज्याभिषेक होने तक चलता है क्योंकि एडवान्स जन्म लेनेवाली आत्माओं को जन्म देने और उनकी पालना करनेवाली एडवान्स पार्टी की आत्माअें तो पुराने कल्प की ही होती है क्योंकि उनका जन्म तो भोगबल का ही होता है। नये कल्प के संगम का समय पुराने कल्प के संगम समय से बहुत कम अर्थात् २५-३० वर्ष ही होता है।

एडवान्स पार्टी की आत्माअें एडवान्स स्टेज अर्थात् श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन और एडवान्स जन्म अर्थात् सतयुगी प्रथम जन्म के बीच की कडी है। इसलिए उनमें दोनों के गुणधर्म और संस्कार है। उनमें संगमयुगी ब्राह्मण जन्म के श्रेष्ठ संस्कार हैं और सतयुगी जीवन के संस्कार भी है।

दादी प्रकाशमाणीजी के देह त्याग के समय भी बापदादा ने कहा था, "आप तो बच्चों की सेवा के लिए एडवान्स में गई हो क्योंकि अपने राज्य में जो बच्चों का जन्म होने वाला है, वह पवित्र जन्म होने वाला है। नये राज्य में जो जन्म लेने वाले बच्चे हैं उनके लिये आप और मेरे महारथी बच्चे ही निमित्त बनेंगे। जैसे यज्ञ की स्थापना में महारथी निमित्त बनें ऐसे योगबल की पैदाइश करने के निमित्त भी ऐसे योगयुक्त बच्चे ही बनेंगे।"

(संदेश गुलजारदादीजी २४-०६-२०१२)

यह नई दुनिया की स्थापना का राज़ बडा गहरा और रहस्यमय है। हमें तो संगमयुग के परम आनंदमय जीवन का सुख लेना है। भविष्य भले एडवान्स पार्टी में हो या सतयुग में हो।

(३३) संगमयुग का रहस्य

वर्तमान समय को संगमयुग इसलिये कहा जाता है कि कल्प के समय में परमपिता परमात्मा स्वयंम् इस धरा पर अवतरित होकर ब्रह्मामुख द्वारा ज्ञान वर्षा कर अनेक आत्माओं की ज्योति जगाकर नूतन सतयुगी सृष्टि का निर्माण करते हैं। संगमयुग दो भागो में विभाजित है। (१) कलियुग का अंतिम समय अर्थात् पुराने

कल्प का समय जबसे परमपिता परमात्मा अवतरित होकर युग परिवर्तन का कल्याणकारी दिव्य कर्तव्य करते हैं। आत्माएँ इस समय अपने पुराने हिसाब-किताब पूरे करके परमात्मा के साथ विनाश के समय देह त्याग कर परमधाम जाती हैं। (२) उस के बाद एडवान्स जन्म लेनेवाली आत्माएँ परमधाम से आकर योगबल द्वारा जन्म लेती हैं। सर्वप्रथम श्रीकृष्ण की आत्मा का नये कल्प में जन्म होता है। तब से नये कल्प का आरंभ होता है। यह सतयुग आदि का संगमयुग है जो श्री लक्ष्मी-नारायण के राज्याभिषेक तक चलता है।

नई दुनिया में सुख-समृद्धि के साधन प्रचुर मात्रा में होंगे। प्रकृति और परस्पर संबंधोंका सुख अपार होगा। किसी वस्तु की कमी नहीं होगी। दु:ख का नाम निशान नहीं होगा। परन्तु देवताओं की उतरती कला का आरम्भ भी होता है। अतीन्द्रिय सुख का आनंद तो परमपिता परमात्मा के साथ संबंध जोडने में जो होता है, वह देवताओं के भाग्य में नहीं है क्योंकि उस समय परमपिता परमात्मा परमधाम में विश्राम करते हैं।

(३४) लास्ट स्टेज का गायन

त्रिमूर्ति वंशी त्रिमूर्ति बच्चों की तीन प्रकार की लाइट्स का साक्षात्कार होता है।

१. एक तो लाइट का साक्षात्कार होता है नयनों से। नयनों की ज्योति ऐसी दिखाई पडेगी जैसे नयनों में दो बल्ब दिखाई पडे। जैसे अंधियारे में सच्चे हीरे चमकते हैं।

२. जैसे सर्च लाईट फैलती है इस रीति से मस्तक के लाइट का साक्षात्कार होगा।

३. माथे पर लाइट के क्राउन का साक्षात्कार स्पष्ट होगा।

तुम्हारी लाइट को देख दूसरे भी जैसे लाइट हो जायेंगे। कितना भी मन से वा स्थिति में भारीपन हो लेकिन आने से ही हल्का हो जाये।

ऐसी स्टेज अब पकडनी है। अभी से ही अपना गायन सुनेंगे। द्वापर का गायन कोई बडी बात नहीं है। लेकिन ऐसे साक्षात्कारमूर्त और साक्षात्मूर्त बनने से अभी का गायन अपना सुनेंगे। आपके आगे आने से लाइट ही लाइट देखने में आये। ऐसे होना

है। जैसे वतन में लाइट ही लाइट देखने में आती है, वैसे यह स्थूल वतन मधुबन लाईट का हाउस हो जायेगा। अभी यह है लास्ट पढाई की लास्ट सब्जेक्ट प्रेक्टिकल में। थ्योरी का कोर्ष समाप्त हुआ। इस लास्ट सब्जेक्ट में बहुत फास्ट पुरुषार्थ करना पडेगा। इसी स्टेज के लिये ही गायन है।

ऐसे त्रिमूर्ति लाइट का साक्षात्कार एक-एक से होना है, तब कहेंगे यह तो जैसे फरिश्ता है।

(३५) बाप को कैसे प्रत्यक्ष करेंगे?

चौदह साल की भट्ठी के बाद जो बच्चे बापदादा के समीप रहे, वे सर्विस स्थानों पर निकले तो लोग सभी क्या कहते थे? "सभी की बातें एक ही हैं।" सभी के रहन-सहन, अलौकिक आकर्षण जहाँ देखो वही नजर आता था। व्यक्त होते हुए भी सभी को अव्यक्त फरिश्ते नज़र आते थे। यह किसका प्रभाव पडता था? अव्यक्ति पालना का प्रभाव।

विशेष आत्माओं को अब अपनी विशेषता दिखानी है। अभी से सभी -

(१) एकता, (२) स्वच्छता, (३) महीनता, (४) मधुरता और (५) मन, वाणी, कर्म में महानता - यह पाँच बातें हर संकल्प, हर बोल, हर कर्म में याद रखकर अपने में विशेषता लायेंगे तब बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। अपने संपूर्ण संस्कारों से ही बाप को प्रत्यक्ष कर सकते हो।

१. कोई भी आत्मा के बंधन (लगाव, प्रभाव) में आना यह निर्बंधन की निशानी नहीं है।

२. कैसी भी परिस्थिति में महिन बुद्धि वाले अपने को सामना करने की शक्ति से मोल्ड कर सकेंगे। घबरायेंगे नहीं। जब हल्के होंगे तब ही मोल्ड हो सकेंगे।

३. कोई भी चीज को गर्म कर नर्म किया जाता है, फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ नर्माई है नम्रता, निर्मानता और गर्माई है शक्तिरूप। निर्मानता अर्थात् स्नेहरूप।

४. फाइनल पेपर है अन्त मति सो गति। अन्त में सहज रीति शरीर के भान से मुक्त हो जाये यह है पास वीथ ऑनर की निशानी। प्रेक्टिकल में देखा ना, एक सेकन्ड के बुलाने पर एवररेडी रह दिखाया। एलान निकला और एवररेडी। बहुत समय से न्यारापन नहीं होगा तो यह शरीर का प्यार पश्चात्ताप में लायेगा।

(३६) मुक्तिधाम का गेट खोलने की चाबी

बापदादा के पास एडवान्स पार्टी बार बार आकर कहती है कि हमें तो एडवान्स पार्टी का पार्ट दिया वह बजा रहे हैं लेकिन हमारे साथी एडवान्स स्टेज क्यों नहीं बनाते? अभी क्या उत्तर दें? एडवान्स स्टेज और एडवान्स पार्टी का पार्ट, जब दोनों मिले तब तो समाप्ति होगी।

सब मना लिया, सिल्वर जुबली, गोल्डन जुबली, डायमंड जुबली, प्लेटिनम जुबली... सब मना लिया। अब एडवान्स स्टेज सेरेमनी मनाओ। उसकी डेट फिक्स करो। (आखिर तो यह होना ही है) आखिर भी कब? (पहली लाइन वाले चुप हैं) मतलब यह है कि अभी ईतनी तैयारी नहीं है।

एक तरफ एडवान्स पार्टी बापदादा को बार-बार कहती है - कब तक, कब तक? दूसरा प्रकृति भी बाप को अर्जी करती है, अभी परिवर्तन करो। समय भी पुकार रहा है। माया भी थक गई है, वह भी चाहती है कि अभी हमें मुक्ति दो। देते हैं लेकिन बीच-बीच में थोडा दोस्ती कर देते हैं। तो बापदादा कहते हैं, हे मास्टर मुक्तिदाता, अभी सब को मुक्ति दे दो क्योंकि सारे विश्व को कुछ ना कुछ प्राप्ति की अंचली देनी है। इस समय, समय आपका साथी है सर्व आत्माओं को मुक्ति में जाना ही है। दूसरे समय में आप पुरुषार्थ करो तो समय नहीं है। इसलिये आप दे नहीं सकते। अभी थोडा समय रहा हुआ है, इसलिये बापदादा कहते हैं पहले स्व को मुक्ति दो, फिर विश्व की सर्व आत्माओं को मुक्ति देने की अंचली दो। अभी से दयालु, कृपालु, मर्सीफूल के संस्कार बहुत काल से नहीं भरेंगे तो आपके जडचित्र में मर्सीफूल का, कृपा का, रहम का, दया का वाइब्रेशन कैसे भरेगा?

एडवान्स पार्टी भी आपको याद कर रही है कि कब बाप के साथ मुक्तिधाम का दरवाजा खोलेंगे? लेकिन इसमें आप बच्चों का बाप को सहयोग चाहिए। सभी साथ चलेंगे ना, या रुक रुक कर चलनेवाले हैं? पसंद है ना साथ में चलना? अगर साथ में चलना है तो समान तो बनना ही पडेगा ना?

जब बिलकुल बेहद के वैरागी बन जायेंगे, वृति में भी वैरागी, दृष्टि में भी बेहद के वैरागी, संबंध-संपर्क में, सेवा में सब में बेहद के वैरागी... तभी मुक्तिधाम का दरवाजा खुलेगा। अब मुक्तिधाम का दरवाजा खोलने के निमित्त तो आप हो ना? ब्रह्मा बाप के साथी होना?

तो बेहद की वैराग्य वृत्ति है गेट खोलने की चाबी। अभी चाबी तैयार ही नहीं है। ब्रह्मा बाप भी इन्तजार कर रहा है, एडवान्स पार्टी भी इन्तजार कर रही है, प्रकृति भी तंग हो गई है। समय की भी यही पुकार है। माया भी विदाई लेना चाहती है। अभी बोलो। हे मास्टर सर्वशक्तिवान, क्या करना है?

अभी बेहद के वैराग्य की, मुक्तिधाम जाने की चाबी तैयार करो।

(३७) विजय का नगाड़ा कब बजेगा?

रूहानी सेना जब संगठित रूप में, एक ही इशारे से और एक ही सेकंड में, सभी एकरस स्थिति में स्थित हो जायेंगे, तब ही विजय का नगाड़ा बजेगा। क्या सिर्फ थोडी सी विशेष आत्माओं की ही एकरस स्थिति की अंगुली से कलियुगी पर्वत उठना है या सभी की अंगुली से उठेगा? यह जो चित्र में सभी की एक ही अंगुली दिखाते हैं (गोवर्धन पर्वत उठाने में)। उसका अर्थ भी संगठन रूप में एक संकल्प, एक मत, और एकरस स्थिति की निशानी है। तो बापदादा बच्चों से पूछते हैं कि यह कलियुगी पहाड़ कब उठायेंगे? और कैसे उठायेंगे? क्या एकरस स्थिति में एवररेडी हो? जब तक इस दैवी संगठन की एकरस स्थिति प्रख्यात नहीं होगी, तब तक बापदादा की प्रत्यक्षता समीप नहीं आयेगी।

हरेक ब्राह्मण की रिस्पोन्सिबिलिटी न सिर्फ अपने को एकरस बनाना है लेकिन

सारे संगठन को एकरस स्थिति में स्थित कराने के लिए सहयोगी बनना है। ऐसे नहीं खुश हो जाना कि मैं अपने रूप से ठीक ही हूँ। अगर संगठन में एक भी मणका भिन्न प्रकार का होता है तो माला की शोभा नहीं होती। ऐसे संगठन की शक्ति ही परमात्म-ज्ञान की विशेषता है। इस से ही विश्व में सारे कल्प के अंदर वह समय गाया हुआ है "एक धर्म", "एक राज्य", "एक मत" - यह स्थापना कहाँ से होगी? इस ब्राह्मण संगठन की विशेषता - देवता रूप में प्रेक्टिकल चलते हैं? यह विशेषता, जिससे कमाल होनी है, प्रत्यक्षता होनी है - अब प्रत्यक्ष में है?

इसको साकार रूप में लाना अर्थात् संपूर्ण स्टेज प्रत्यक्ष करना है। सभी सजनियाँ घूंघट में हैं, अब घूंघट को हटाओ।

हरेक में जो पुराने संस्कार हैं, जिसको आप नेचर कहते हो वह माया के संस्कार अंशमात्र भी न रहे। हरेक का जो अपना मूल संस्कार है - वही आदि संस्कार है। अब लास्ट पुरुषार्थ अपने पुराने ६३ जन्मों के संस्कारों को परिवर्तन करना है। तब ही संगठन रूप में एक-रस स्थिति बन जायेगी। इस पुरुषार्थ में सफलता प्राप्त करने के लिये यही पाठ पक्का करो - "फॉलो फादर"। समझा?

(३८) अंतिम पुरुषार्थ

वरसे के अधिकारी बनने में सिर्फ दो शब्द बुद्धि में रखने से अन्तर समाप्त हो निरंतर मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति बना सकते हो। एक शब्द है स्मृति को यथार्थ बनाने का, दूसरा है कर्म को श्रेष्ठ बनाने का। एक है - स्मृति को पावरफुल बनाने के लिये सदा कनेक्शन और दूसरा है कर्म को श्रेष्ठ बनाने के लिये सदा अपनी करेक्शन चाहिये। करेक्शन हर कर्म में न होने के कारण मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर निरंतर स्थित नहीं हो पाते हो। चलते चलते फिर आराम पसंद हो जाते हो और स्थिति बनाये रखने में मुश्किल अनुभव करते हो तो बापसमान बनने में आराम पसन्दी या अलबेलापन श्रेष्ठ स्थिति को नहीं पा सकते। इसलिये हर संकल्प और कर्म की करेक्शन करो और बापदादा के कर्मों से कनेक्शन जोडो। फिर देखो कि बापसमान

हैं? अभी आप श्रेष्ठ आत्माओं का लास्ट पुरुषार्थ कौन सा रह गया है?

गीता के भगवान के द्वारा गीता में फाईनल स्टेज का वर्णन करते हो ना? (नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप) तो स्मृति स्वरूप किस स्टेज तक बने हो? और नष्टोमोहा कहाँ तक बने हो? यही है लास्ट पेपर।

पास विथ ऑनर बनने के लिये तीन अर्थ याद रखो (१) जो कुछ हुआ वह पास हो गया। (बीत गया) (२) पास अर्थात् साथ - बापदादा के पास रहना है अर्थात् साथ रहना है। (३) पास होना है अर्थात् रिजल्ट में पास विथ ऑनर होना ही है।

(३९) सच्चे सेवाधारी

बापदादा हरेक बच्चे में तीन विशेषताअें देख रहे हैं। (१) स्नेह, (२) सहयोग अर्थात् सहज योग, (३) शक्ति स्वरूप अर्थात् चलते फिरते चैतन्य लाइट हाउस और माइट हाउस। हर संकल्प बोल वा कर्म द्वारा तीनों ही स्वरुप प्रत्यक्ष रूप में ओरों को भी अनुभव हो।

जैसे प्राकृतिक सागर के किनारे पर शीतलता की, शांति की स्वत: ही अनुभूति होती है; ऐसे मास्टर स्नेह के सागर द्वारा रूहानी स्नेह की अनुभूति हो और रूहानी

खुशबू वायुमंडल में अनुभव हो। बाप के तो स्नेही हो, लेकिन अभी स्नेह की खुशबू विश्व में फैलानी है। हर आत्मा को इस खुशबू का अनुभव कराना है। सेवाधारी का कर्तव्य क्या है? हर विशेषता को सेवा में लगाना। कई बच्चे ऐसा अनुभव करते हैं कि बाप के बन गये। रोज मूरली सुन भी रहे हैं, पुरुषार्थ भी करते हैं, नियम भी निभा रहे हैं लेकिन पुरुषार्थ में जो वृद्धि वा तीव्रता होनी चाहिये वह अनुभव नहीं होती। इसका कारण क्या है? विशेषताओं को सेवा में नहीं लगाते। सिर्फ ज्ञान सुनाना वा कोर्स कराना, यहाँ तक सेवा नहीं है। सुनाना, यह तो द्वापर से परंपरा चल रही है। ब्राह्मण जीवन की विशेषता है सुनाना अर्थात् कुछ प्राप्त कराना। दाता के बच्चे हो। जो भी संपर्क में आये वह अनुभव करें कि कुछ लेकर जा रहे हैं। चाहे ज्ञान के धन से, चाहे

स्नेह के धन से, चाहे शक्तियों के धन से वा यादबल के धन से वा सहयोग के धन से बुद्धि में भरकर जा रहे हैं। इसको कहा जाता है सच्ची सेवा। सेकन्ड का दृष्टि वा मीठे बोल द्वारा, अपने शक्तिशाली वृत्ति के वाइब्रेशन द्वारा, संपर्क द्वारा दाता बन देना है। ऐसे देनेवाले सदा यह अनुभव करेंगे कि हर समय वृद्धि को वा उन्नति को पा रहे हैं।

ऐसे ही सहयोगी वा सहजयोगी। एक दो के सहयोगी नहीं बनना। सच्चे सहयोगी बेहद के सहयोगी हैं। आप सब का टाइटल क्या है? विश्व कल्याणकारी या सिर्फ सेन्टर के कल्याणकारी?

इस विधि प्रमाण शक्तिशाली आत्मा सर्व शक्तिओं को स्व के प्रति नहीं सर्व के प्रति सेवा में लगायेंगी। कोई में सहनशक्ति नहीं है, आपके पास है। दूसरे को यह शक्ति देना यह है शक्ति को सेवा में लगाना। सर्व शक्तिओं की लाइट - माइट दूसरे तक पहुँचनी चाहिये। दूसरे अनुभव करें कि निर्बलता के अंधकार से शक्ति की रोशनी में आ गये हैं। हर बोल द्वारा, हर विशेषता द्वारा बाप की स्मृति दिलावे। कनेक्शन स्वयम् से नहीं, निमित्त बन बाप से करायेगी। अगर आपको देखा, आप के प्रभाव में आये, बाप को नहीं देखा तो यह सेवा नहीं हुई। यह द्वापरयुगी गुरूओं के मुआफिक बेमुख किया। यह पुण्य नहीं पाप है। क्योंकि बाप नहीं है तो पाप जरूर है।

(४०) त्याग से भाग्य

स्वयं के त्याग से दूसरों का भाग्य बनता है। जहाँ स्वयं का त्याग नहीं वहाँ दूसरों का भाग्य नहीं बनता। जैसे ब्रह्मा बाप अपने रेस्ट का समय भी अपने प्रति न लगाकर विश्वकल्याण प्रति लगाते रहते थे, ऐसे सर्वशक्तियाँ भी विश्वकल्याण प्रति लगाओ। दूसरों को देने के साथ-साथ अपना जमा करो। अगर अभी तक भी अपने प्रति लगाते और समय गँवाते रहेंगे तो विश्व के महाराजन नहीं बन सकेंगे।

शुरू में जब ज्ञान गंगाये निकलीं तो उस समय की सेवा की विशेषता क्या थी? उस समय के निकले हुए वारिस और इस समय की निकली हुई आत्माओं में अंतर

क्यों? सर्विस तो अब ज्यादा हो रही है, लेकिन वारिस दिखाई नहीं देते क्यों? उस समय अपनापन - मेरापन नहीं था। विश्वकल्याण के अर्थ अपना सभी कुछ देना है, वह भावना थी। एकानामी और इकोनॉमी वाले थे। सभी खजाने की इकोनॉमी थी। व्यर्थ नहीं गँवाते थे। समय, शक्ति जो भी है वह दूसरों को देने की भावना थी अर्थात् महादानीपन की स्टेज थी। उस समय की स्टेज और अभी की स्टेज देखो, कितना फर्क है। अभी पहले साधन सोचेंगे पीछे सर्विस। परंतु शुरू में था पहले सर्विस, फिर सेल्वेशन मिले न मिले। सेल्वेशन से सर्विस करनी है। यह संकल्प मात्र नहीं था। साधन हो तो सर्विस हो, साथी हो तो सर्विस हो, धरनी हो तो सर्विस हो - यह संकल्प नहीं थे। जहाँ जाओ, जैसी भी परिस्थिति हो, जैसा भी प्रबंध हो - सहनशक्ति से सेवा को बढाने की लगन थी। यह महादानी की स्टेज है। तो शुरू की स्थिति में स्वयं के सभी सुखों का त्याग था, तभी तो आप अनेक लोगों का भाग्य बना। तो अब फिरसे वही महादानी बनने का संस्कार इमर्ज करो, त्याग वृत्ति में रहो तो छिपे हुए वारिस आत्माओं का भाग्य बना सको। सर्व साधन होते हुए भी साधना में रहो, साधन में न आओ। अभी साधना कम है, साधन ज्यादा हैं। पहले साधन कम थे, साधना ज्यादा थी। ऐसा न हो कि अपने त्याग की कमी के कारण अनेक आत्माओं के भाग्य की रेखा सम्पन्न न कर सको।

जैसे जैसे समय समीप आता जा रहा है, वैसे वैसे संकल्प में भी व्यर्थ न गँवाने की जिम्मेवारी भी हरेक आत्मा के उपर बढती जा रही है। इसलिये अलबेलापन छोड समय प्रमाण अपने को सदा स्मृति में रखते हुए जिम्मेवारी को संभालते जाओ। समझा?।

(४१) ऐसे एवररेडी हैं?

जब चाहे शरीर का आधार लें और जब चाहें शरीर का आधार छोडकर अपने अशरीरी स्वरूप में स्थित हो जायें - क्या ऐसे अनुभव चलते-फिरते करते रहते हो? यही अनुभव अंतिम पेपर में फर्स्ट नंबर लाने का आधार है। जैसे विनाश करनेवाले एक इशारा मिलते ही अपना कार्य संपन्न कर देंगे, तो क्या विश्व का नव-निर्माण करनेवाले

अर्थात् स्थापना के निमित्त बनी हुई आत्माएँ ऐसे एवररेडी हैं? जैसे लाइट हाउस और पावर हाउस एक सेकन्ड के स्विच ऑन करने से चारों और लाइट व माइट फैला देते हैं। क्या ऐसे ही पांडव सेना एक सेकन्ड के डायरेक्शन प्रमाण लाइट हाउस और माइट हाउस बन सर्व आत्माओं को लाइट और माइट का वरदान दे सकती हैं? तीसरे नेत्र द्वारा एक सेकन्ड में विश्व में चारों ओर आत्माओं को नजर से निहाल कर सकते हो? गायन भी है एक सेकन्ड में तीसरा नेत्र खुलने से विनाश हो गया।

तीसरे नेत्र को शक्तिशाली बनाने के लिये केवल मुख्य दो शब्दों पर अटेन्शन चाहिये। तीसरे नेत्र में कमजोरी आने की भी वही दो बातें हैं। एक लगाव, दूसरा पुराना स्वभाव। यह दो मुख्य कमजोरियाँ हैं। लगाव और स्वभाव बदल जाए तो विश्व भी बदल जाए। क्योंकि जब विश्व के परिवर्तक स्वयं ही नहीं बदले हैं तो विश्व को कैसे बदल सकते हैं?

अपने में चेक करो कि क्या किसी भी प्रकार का लगाव है? चाहे वह संकल्प के रूप में हो, चाहे सम्बन्ध के रूप में, चाहे सम्पर्क के रूप में, चाहे अपनी कोई विशेषता की तरफ हो। लगाव बंधनयुक्त कर देगा, बंधनमुक्त नहीं करेगा क्योंकि लगाव अशरीरी बनने नहीं देगा और वह विश्वकल्याणकारी भी बना नहीं सकेगा। जो स्वयं ही लगाव में फंसा हुआ है वह विश्व को मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा दिला ही कैसे सकता है? लगाव वाला कभी सर्वशक्ति सम्पन्न हो नहीं सकता। लगाव वाला धर्मराज की सजाओं से सम्पूर्ण मुक्त सलाम लेनेवाला नहीं बन सकता। लगाव वाले को सलाम भरना ही पडेगा और वह सम्पूर्ण फर्स्ट जन्म का राज्यभाग्य पा न सके।

इसी प्रकार पुराने स्वभाव वाले नये जीवन, नये युग का सम्पूर्ण और सदा अनुभव नहीं कर पाते। हर आत्मा में भाई-भाई का भाव रखने में स्वभाव एक विघ्न बन जाता है। अभी क्या करना है? बाप-समान बन जाना है। न कोई पुराना स्वभाव हो, न कोई लगाव हो। तन, मन, धन सभी बाप को समर्पण कर दिया, फिर देने के बाद "मेरा" अभी तक है? मेरा विचार, मेरी समज, मेरा स्वभाव, यह शब्द कहाँ से आया?

चित्रकारों ने महावीर को भी पूंछ की निशानी दे दी है। यह पूंछ कौन सी है? लगाव और स्वभाव की। जब तक इस पूंछ को आग नहीं लगाई है, तब तक लंका को आग नहीं लग सकती। मेरा नाम हो, मेरी शान हो, मुझे पूछा? यह कामना भी नहीं हो। समझा?

(४२) वतन में रूह-रिहान

समय और संपूर्णता दोनों में कितना अंतर रह गया है? अभी हम तो एडवान्स का कार्य कर रहे हैं लेकिन हमारे साथी हमारे कार्य में विशेष क्या सहयोग दे रहे हैं?

"वे लोग भी माला बना रहे हैं। कहाँ कहाँ किस किस का नई दुनिया के आरंभ करने का जन्म होगा? वह निश्चित हो रहा है। उन्हों को भी अपने कार्य में विशेष सहयोग सूक्ष्म शक्तिशाली मनसा का चाहिये।जो शक्तिशाली स्थापना के निमित्त बनने वाली आत्माएँ हैं वह स्वयं भले पावन हैं लेकिन व्यक्तियों का, प्रकृति का वायुमंडल तमोगुणी है। अति तमोगुणी के बीच अल्प सतोगुणी आत्माएँ कमलपुष्प समान हैं इसलिये क्या हमारे साथियों को इतनी बडी सेवा की स्मृति है, वा सेन्टरों में बीजी हो गये हैं?"

"इतना सारा प्रकृति परिवर्तन का कार्य और तमोगुणी संस्कार वाली इतनी आत्माओं का विनाश किसी भी विधि से होगा लेकिन अचानक के मृत्यु, अकाले मृत्यु, समूह में मृत्यु, उन आत्माओं के वायब्रेशन कितने तमोगुणी होंगे; उस को परिवर्तन करना और स्वयं को भी ऐसे खूने नाहक वायुमंडल वायब्रेशन से सेफ रखना और उन आत्माओं को सहयोग देना क्या इस विशाल कार्य के लिये तैयारी कर रहे हो? या सिर्फ कोई आया, समझाया और खाया इसी में ही तो समय नहीं जा रहा है?"

आज बापदादा एडवान्स पार्टी का सन्देश सुना रहे हैं। योगबल के लिये मन्सा शक्ति की आवश्यकता है। अपनी सेफ्टी के लिये भी मन्सा शक्ति साधन बनेगी। मन्सा शक्ति द्धारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे।

(४३) कर्मातीत अवस्था की समीपता

- ✶ समीपता की निशानी है समानता। किस बात में?
- ✶ सेकन्ड में आवाज में आना और सेकन्ड में आवाज से परे हो जाना।
- ✶ साकार स्वरूप में कर्मयोगी बनना और साकार स्मृति से परे निराकार स्थिति में स्थित होना।
- ✶ सुनना और स्वरूप होना।
- ✶ मनन करना और मगन रहना।
- ✶ रूह-रूहान में आना और रूहानियत में स्थित हो जाना।
- ✶ सोचना और करना समान।
- ✶ कर्मेन्द्रियों का आधार लेना और उससे परे हो जाना।
- ✶ प्रकृति द्वारा प्राप्त साधनों को स्वयं प्रति कार्य में लगाना और समय प्रमाण साधनों से निराधार हो जाना।
- ✶ इन सभी बातों में समानता को कहा जाता है कर्मातीत अवस्था की समीपता।

(४४) कर्मातीत स्थिति के अनुभव के लिये

- ✶ विकर्मो का खाता पूरा खत्म हो और सुकर्मो का खाता भरपूर हो।
- ✶ सर्व आत्माओं के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना हो, जिससे अंत समय उनकी भी हमारे प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना हो, उनकी दुआऐं हमारे साथ हो।
- ✶ सर्व व्यक्तिओं और वस्तुओं से नष्टोमोहा स्थिति हो अर्थात् सब से, इस देह के साथ के हिसाब-किताब खत्म हों और एक परमात्मा के साथ बुद्धियोग हो, जिससे न मुझ को किसी की याद आये और न किसी को मेरी याद खींचे।
- ✶ देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास हो, अपनी देह के साथ भी मोह न हो।

✶ विश्वनाटक के यथार्थ ज्ञान को समझकर साक्षी होकर पार्ट बजाते हुए देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास करना और नये पाप कर्मों से बचना अति आवश्यक है।

✶ कर्मातीत स्थिति का अनुभव अन्त समय दादी ने किया और हम सबको भी करने के लिये प्रेरणा दी। अव्यक्त बापदादा सदा ही ऐसा देह से सहज न्यारा होने का अभ्यास करने की प्रेरणा देते रहते हैं जिससे अंत समय सहज देह का त्याग कर सकेंगे।

(४५) अनमोल शिक्षाऐं

- दादी प्रकाशमणि

१. हमारा फाइनल पेपर है "नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा"। इस पेपर में वही पास होता है जिसकी नज़रों में सदा एक परमात्मा बाप ही दिखाई देता है। बाप ही में सारा संसार अनुभव हो। अगर अंदर में रहता है कि यह मेरी विशेषता, मेरे संबंधी, मेरी प्रोपर्टी... यह "मैं और मेरापन" नष्टोमोहा बनने नहीं देता। जहाँ "मैं" है वहाँ निर्माणता आ नहीं सकती। वह नव-निर्माण का कार्य भी नहीं कर सकता।

२. जो स्मृति स्वरूप हैं वही नष्टोमोहा बनते हैं। वही सच्चे ट्रस्टी और वारिस आत्मा हैं। उनकी स्थिति, वैभव, साधन, मान-शान और पोजीशन के आधार पर नहीं होती। वे फट से बीती सो बीती कर सकेंगे और सेकन्ड में डीटेच होकर फरिश्ता वा बिन्दी स्वरूप बन जायेंगे। अभी हम बेगर टू प्रिन्स हैं। बाबा ने हमें नया जन्म दिया है। इस नये जन्म में हमारा कुछ भी नहीं। यह स्मृति और फिर नष्टोमोहा की बहुत सूक्ष्म मंजिल है।

३. बाबा का बनना माना सच्चाई और सफाई। हर एक को ध्यान रखना है कि मेरे दिल में कोई भी व्यर्थ किचड़ा न हो। इम्प्यूरीटी का किचड़ा बहुत पडा है। पुराने स्वभाव-संस्कारों की गन्दगी झूठ बोलना, ठगी करना, झरमुई-झगमुई,

परचिंतन, परदर्शन आदि से बुद्धि में किचड़ा भरता जाता है, जो भारी कर देता है और उड़ने नहीं देता। खुद को निर्दोषी और दूसरों को दोषी बताना यह भी सफाई नहीं है। साफ दिलवाला अंतर्मुखी होकर अपनी गलतियों की करेक्शन करेगा, रियलाइज करेगा। वह सरल और निर्माणचित्त होगा। किसी पर रोष नहीं करेगा। वाणी मीठी होंगी। दिल बड़ा होगा। सदा स्वमान में रहेगा और सर्व को सम्मान देगा। दिल में सदा सर्व प्रति शुभ-भावना और क्षमाभाव रहेगा।

४. मीठे बाबा ने हम सब को बेगमपुर का बेफिक्र बादशाह बनाया है। मीठे बाबा का मुझ पर पर्सनल वरदान है कि जिससे हमें कभी कोई फिकर वा चिंता नहीं होती। कोई व्यर्थ चिंतन भी नहीं चलता। हम तो स्वयं को निमित्त समझते हैं। फिकरात करने वाला करे। मैं क्यों करूँ? बाबा, तेरी रचना है, तुम उनका फिकर करो। जब करन-करावनहार जवाबदार है, हम तो निमित्त हैं, फिर फिकरात किस बात की? कोई बात है, प्लैन करो, राय करो लेकिन चिंता नहीं। चिंता तो चिता के समान है।

५. संगठन में चलने की विधि सीखो। संगठन में भाव-स्वभाव तो होंगे। एक-दो के विचार नहीं मिलते। एक दूसरे को गलत या बुरा समझते लेकिन बुरे में कोई तो अच्छाई होगी या नहीं? उसकी अच्छाई को देखकर बात करो, तो बुराई आपेही खतम हो जायेगी। सर्व प्रति शुभ-भावना रखो। अगर कोई आपकी बात नहीं मानता, जिद्द करता है तो आप वह बात छोड़ दो। वह आपेही ठंडा हो जायेगा। गरम चीज को और गरमी नहीं देना है, उस पर शीतल पानी डाला जाता है।

६. हम ब्राह्मण कुलभूषण है। श्रीमत अनुसार रोज मुरली सुनो, अमृतवेला बाबा से मिलन मनाओ। मर्यादा में चलो, योगयुक्त होकर रहो। मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिये। कटुवचन न निकले। क्रोध करना, अपशब्द बोलना यह शोभा देता है क्या? क्रोध मुक्त रहने का पक्का वायदा करो। दृष्टि-वृत्ति सदा

पावन रहे ऐसी दृढ़प्रतिज्ञा करो।

७. संगमयुग के अमूल्य समय का फायदा उठाओ। अवगुण खतम करने का दृढ़पुरूषार्थ करो। देवता बनना माना सतोप्रधान बनना। क्या मेरे में देवताई गुण इमर्ज होते हैं? एक एक को रूहानियत देना, शीतलता, सम्मान और स्नेह देना यही मेरी महानता है। मैं दाता की बच्ची दाता हूँ। मुझे देना ही सीखना है।

८. कभी भी अपने दिल में किसी के प्रति नफरत वा इर्ष्या का भाव न हो। दूसरों के अवगुण देखना, परचिंतन करना, कटु वचन बोलना इससे दुश्मनी बढ़ेगी। किसी के दिल में दर्द पैदा करे ऐसे बोल वा व्यवहार नहीं करना है। जिद्द का स्वभाव रसातल में पहुँचा देता है। एक दो को सहयोग दो। क्षमा मांग लो और क्षमा कर हलके हो जाओ। स्वयं लाईट-माईट की मस्ती में रहो। कर्मेन्द्रियों और वृत्तियों को वश करना ही तपस्या है।

(४६) परमात्म प्रत्यक्षता के लिये

१. अपनी बोलचाल की भाषा को अलौकिक बनाओ। हर कर्म, चलन और चेहरे द्वारा दर्शनीय मूर्त और दिव्यता सम्पन्न बनो।

२. अभी तक भी भक्त लोग आप दर्शनीय मूर्तियों का एक सेकन्ड दर्शन करने के लिये तडप रहे हैं। उनको प्रसन्न करने के लिये दिल में रहम और कल्याण की शुभ भावना इमर्ज करो।

३. जब स्वयं "ईच्छा मात्रम् अविद्या" हो जाते हो, तब ही अन्य आत्माओं की सर्व इच्छाओं को पूर्ण कर सकते हो।

४. अनेक भक्त आत्मा रूपी पत्ते जो सूख गए हैं, उन्हें बीजरूप स्थिति द्वारा फिर से (पुनः) शक्तियों का दान दो।

५. स्वदर्शनचक्रधारी ही दिव्य दर्शनीय बनते हैं। अपने दिव्य संकल्प, दिव्य द्रष्टि, दिव्य बोल, दिव्य कर्म द्वारा अन्य आत्माओं को भी दिव्य मूर्त अनुभव होंगे।

६. देवता भविष्य में बनेंगे लेकिन अभी दिव्यता स्वरूप अर्थात् फरिश्ता स्वरूप बनना है। ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रख फॉलो फादर करो।

७. कोई भी देखे तो यह अनुभव करे कि इन्हें पढ़ानेवाला स्वयं सर्वशक्तिवान बाप है। यह प्रत्यक्ष प्रमाण ही बाप को प्रत्यक्ष करने का सहज और श्रेष्ठ साधन है।

८. अभी आप प्रत्यक्ष हो, बाप गुप्त है। जब बाप आप द्वारा प्रत्यक्ष दिखाई दे और आप गुप्त हो जाओ फिर हरेक की दिल से बाप की प्रत्यक्षता के गुणगान सुनेंगे।

९. जो आप बच्चों का श्रेष्ठ स्वमान है, जीवन की श्रेष्ठताअें हैं, पहले उन्हें स्वयम् में प्रत्यक्ष करो। जब अपने में यह प्रत्यक्षता आयेगी तब सृष्टि में परमात्म प्रत्यक्षता होगी।

१०. अब प्रयत्न करने का समय गया। अब तो प्रतिज्ञा और अपने संपूर्ण सतोप्रधान रूपकी प्रत्यक्षता करनी है। साक्षात् बाप समान साक्षात्कार मूर्त बनना है।

११. परमात्म प्रत्यक्षता के लिये प्रतिज्ञा करो कि वेस्ट खतम करेंगे और बेस्ट बनेंगे। किसी भी हालत में हार नहीं खाअेंगे, बाप के गले का हार बनकर रहेंगे।

१२. परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनने के लिये स्वयं के शक्तिशाली वायब्रेशन द्वारा वायुमंडल को शक्तिशाली बनाओ। आपसी संस्कार मिलन की रास रचाओ। इसके लिये भुलाना, मिटाना और समाना तीनों ही बातें करनी पडेगी।

१३. वायुमंडल को शक्तिशाली बनाने के लिये संगठन में एक दो की बातों का स्वीकार और सत्कार करना होगा। गुणग्राहक बनो। स्वयं निर्माण बन अन्य को आगे बढ़ाओ - महिमा करो।

१४. लाइट हाउस - माइट हाउस दोनों ही स्वरूप इमर्ज रूप में हो, तब बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बन सकेंगे। इसके लिये ज्वाला स्वरूप और बीज स्वरूप स्थिति का अभ्यास करना होगा।

१५. हर सेकन्ड, हर संकल्प अटेन्शन और एक्यूरेट हो तब ही बापदादा को प्रत्यक्ष

करने का पार्ट बजा सकेंगे। व्यर्थ संकल्प, बोल और कर्म की आहुति देकर भविष्य दिव्य जन्म के संस्कार इमर्ज हो।

१६. आप का हर कर्म दर्पण बन जाए, जिस दर्पण से बापदादा के गुण और कर्तव्य का दिव्य रूप और रूहानियत का साक्षात्कार हो। लेकिन दर्पण वही बन सकता है जो अपने देह अभिमान को भी अर्पण करता है।

१७. प्रत्यक्षता का पर्दा तभी खुलेगा जब आपकी स्टेज सम्पन्न और संपूर्ण होगी। सदैव यह स्मृति में रखो कि मैं हाईएस्ट और होलीएस्ट हूँ।

१८. अभी लास्ट यही सीजन रह गई है जिसमें प्रत्यक्षता का नगाडा बजेगा। साइलेंस की शक्ति द्वारा ही नगाडा बजेगा। जब तक मुख के नगाडे ज्यादा है, तब तक प्रत्यक्षता नहीं।

१९. जहाँ शांति सागर के बच्चे रहते हैं, वह स्थान शांति कुंड हो। जब चारों ओर आग जल रही हो जो सब शीतल कुंड की तरह दौडकर जाते हैं। आप बच्चे मनसा सेवा द्वारा शांतिकुंड की प्रत्यक्षता कर सकते हो।

२०. परमात्म प्रत्यक्षता का आधार सत्यता है। एक स्वयं के स्थिति की सत्यता, दूसरी सेवा की सत्यता। सत्यता का आधार है स्वच्छता (दिव्यता) और निर्भयता।

"आज"

भगवान का दिया हुआ उपहार है

चलो, अपने लक्ष्य के प्रति एक कदम और बढायें

जो भी करना है अभी कर लो

यह वक्त जा रहा है.....